दुनियाबाबाक खरचा

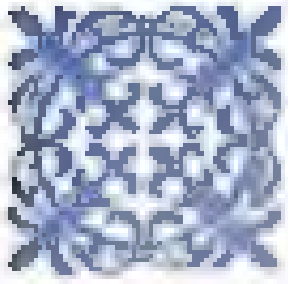

श्री राजेश्वर झा

प्राक्कथन

नाहं गरेन्द्रो न गरेन्द्रपुत्रः
पादोपजीवी तव देव भृत्यः
अथापियस्यैव निवेदनार्थं-
जिह्वाग्रतोऽहं तव पादमूलम्

—दिव्यावदान

परिवर्तने तँ सत्य थिक ! जे पहिने नहि छल से आब अछि और जे आब अछि ओ आबाक केँ प्राप्त करैत अछि। किन्तु दिव्यावदान मे जे कथा रूपावतीक प्रसंग मे कहल गेल अछि जे आहि सत्यक तेज को एक नेनाक प्राण-रक्षा अपन दुनु स्तन केँ काटि कए कएलक ओ सत्य जे राज्यक हेतु, जे भोगक हेतु, जे स्वर्गक हेतु या जे अन्य कोनो इच्छे सँ प्रेरित छल। ओहि सत्यक साक्षी आब एके गोट भावना छलैक इन्द्रिय लोलुप केँ इन्द्रिय-निग्रह तथा आत्मचरण सिखेबाक, अभुक्त केँ भुक्त करबाक, निस्सहाय केँ अवलम्ब देबाक और दुखी केँ दुखक निवृत्ति करबाक। एहि सत्य सँ प्रेरित तथा मिथ्या आडम्बर एवं कुरीति सँ ग्रसित समाज सँ दुखिया माता उमटल, उपजल और उद्भिन्न छथि।

मिथिलाक पहानता होकर आध्यात्मिक जीवन मे छल जे त्याग, तपस्या तथा नैतिक जीवन मे प्राप्त छलैक। किन्तु परिवर्तन जे सत्य थिक त्याग केँ स्वार्थ मे, साधना केँ मिथ्या आडम्बर मे, और नैतिकता केँ दुराचारिता मे परिणत कए जन-जीवन केँ तेना ने उद्वेलित एवं विषाक्त बनौने अछि जे ओट-पैच सभ ओहि सँ आक्रान्त तँ छथि मुदा ककरहु कोनो टा युक्ति नहि सूझैत छनि। नहि कहि ई आडम्बर एहि समाज केँ कतए जए पामत और कोना मिथिलाक संस्कृतिक रक्षा भए सकत !

दुखिया बाबा प्राचीन मिथिलाक सांस्कृतिक प्रतिनिधि स्वरूप थिकाह जकर विकास द्वेष एवं दम्भ कें पराजित कएकें भेल। हुनका नाम-धाम सें कोनहु सम्बन्ध नहि रहि मात्र हमर कल्पनाक आधार छनि जकर उपकरण कौतुकप्रियता और चातुर्य थिक। बाकी कहुखन अति सरल और नम्र; कहुखन कठोर और अभिमानिनी तथा कहुखन पूर्ण रहस्यमयी जनि नारी-जीवनक सत्य कें सार्थक बनबैत छथि जाहि सें सतत ओ अगमे बगल रहलीह। राधे परस्परविरोधी तत्व कें मिलेबाक एक कड़ी थिकाह जे निष्पक्ष और निस्वार्थ रूपें कटु सत्यक अनुमोदन करैत छथि। हिनको लौकिक नाम-धामक आधार हमर कल्पने थिक।

"दुखिया बाबाक खटरास"क काया सात गोट कथा पर आधारित अछि। एहि मे सँ छः गोट कथा सँ पूर्वहि समय-समय पर 'मिथिला-मिहिर' मे प्रकाशित भए चुकल अछि अकरा मे किछु थोड़ि पुनः पाठकक समक्ष प्रस्तुत कएल अछि। एहि कथा सभ मे कतिपय एहन शब्द सभ अछि जकर प्रयोग गाम-घर मे होइत अछि। एहि मे बेसी शब्द देशी थिक जकरा अपन पृथक इतिहास और व्यापकता छैक।

अन्त मे मैथिलीक साहित्यकार सँ हमर विनम्र अछि जे एहि मे जे दोष और त्रुटि अछि ओकरा हमर अल्पज्ञानक द्योतक बूझि क्षमा करथि।

विद्यापति-स्मृति-दिवस,

१८ नवम्बर, १९७२

—राजेश्वर

सपनाक नोर

नोर चुबेबामे, गप्पकेँ गिजबामे आ गलंबर पर गेड़ ओलबामे अनेक बाह्मणकेँ बुझान रहैछ ओतेक अनका नहि। एहेन कोनो गाम नहि जतए एक-दुगोट एहि तरहक अगिया-बेताल नहि रहैत अछि।

दुखिया बाबाक स्थान गाममे एहने लोकक मध्य छल। सम्बन्धमे ओ काहे काका रहथुन, भाय रहथुन वा बाबा किन्तु हुनका सब दुखिये बाबा नामे सम्बोधन करैत छल।

दुखिया बाबा गाममे तेहन ने जन्मू छलाह जे जँ बसो बरिसो गाममे भोत, साँड़ वा पाड़ाक चहेबामे आबल तँ खुरखुरीलोकनि हुनका दुखिया बाबाक ओतए पठौलनि आ ओ हुनका पठौनिहारक संगे सातो पुरुषाकेँ उद्धेलब आ उकटब प्रारम्भ करैत छलाह। एहि तरहेँ हुनका मकड़ायब आ हुनकर अनटोटल एवं अनसोहाँत अनधुन कथाकेँ जाड़ेबर लोक समझ आबलि भए गेल छलैक। दुखिया बाबाक ओता तँ कतिपय मनोरंजक कथा सब अछि, एहिमे सपनाक नोर बड़ आह्लादपूर्ण अछि।

विपत्ति आ हर्ष दुनूमे साधारणतः लोकक आँखिसँ नोर चुबैत अछि। किन्तु दुखिया बाबाक आँखिसँ अजान कलनो नोर चुअल तँ ओ हुनकर मृत पत्नीक प्रति खुब्ब सिनेह आ मुइल सिमिरिताक हेतु खल पकरा मात्र अकचुअकक बेल कहल जाए सकैछ।

पचीस वर्ष पूर्वक मुइल पत्नीक मलकोका सन मुँह, डोका सन आँखि, काड़िम सन दाँत एवं कोइली सन कुहकब आदिक प्रसंगमे सोन पड़िते दुखिया बाबाक आँखिसँ बहोबहो नोर खसए लगैत छलनि तथा ओ बड़ प्रेमसँ हुनकर सिनेहकेँ बिधुनब लगैत छलाह जे हुनकर मृत्युक पश्चाते सफचूनर भए गेल छल।

पत्नीक मृत्युक उपरान्त यद्यपि बाबा अपन सभटा जिनेहूके सफलेबि पुनः विवाह कए हृदय आ मोन दुनूके हिलकोरए लगलाह किन्तु फलाफल उनटा भेलनि। बापरि सन कारी, सुरपी सन सन दाँत, भेड़ी सन रुक्ष केश तथा किकिर सन कामनके सुमित बाबाक सम्पूर्ण मेहनता दिवसाक भीड़ भए जानि आ जो अपन खाटपर पड़ि कम्बलसँ अपन समस्त अंगके झाँपि लैत छलाह आ बाबी अपन जम्बर देहके खिड़कीपर ओलरबैत अपन अपरोक्षता तथा अराट-कपनीसँ बाबाक जीवनके कुरकुट करैत छलीह। बाबा जँ अपनेसा छलाह तँ बाबी कलगी, बाबा जँ पचाछोस छलाह तँ बाबी बिम्हकी, आ जँ बाबा मोनलकंठ छलाह तँ बाबी अकाबि। कहबाक तात्पर्य ई जे पति आ पत्नीमे परस्परि आकाश पताल अन्तर छल जे दुनूके सदीप अपनाके कष्टक भेल। एहि तरहें समय बितैत गेल तथा एक राति दुखिया बाबा अपन जम्बरके दीप हीन पिंडकान माथि हथीक मतसुतपन पर माहुर किर्चैत निश्चि पड़ि गेलाह।

बाबा मरलाह लोकनि कहलए लगलाह। हथीक मुकुटार पाथिलसभ, मेनकाक पातर हाँर, रंभाक रम्भैत बाँही तथा चिनलेलाक नृत्य हुनकर अन्तः-करणके हलचलित करए लागल। हुनकर अंग-प्रत्यंग सिहरए लगलनि तथा सम्भ्रमके ओ पूर्णतः गमा देलनि। बाबा रुधाइन्द-पूर्वक सुर-सुन्दरीक संग मनुहार करए लगलाह।

किछु कालक उपरान्त बाबाक पट-शिष्य राजे जे सरोकारे बाबाक आगिन रहथिन, हुनकर मृत पत्नीक संग सनेहालाप करैत बाबाक ओलए अयलाह। हुनकर पत्नीक कोराके तीन वर्षक एक गोट कन्या छलनि। बाबा पचीस वर्ष पूर्व विछोह भेल प्रेयसीके बड़ आह्लादसँ भेंट कयलथिन। हुनकर बीरानी ओहि कन्याके कए छाती लगौलनि तथा पैर बढ़ाक बाद अढ़िना पियलसाके अंगी-कार करबाक हेतु अपन पैर-पैर हाथके आगां बढ़ौलनि कि ओ पाछां हटि बाबाके बरजैत कहलीह "राम। राम! की बेमाल करैत छी? अपना पर एना कुदृष्टि देब बड़ पतितपन थिक। की अहाँके नहि सुझल आँखि जे हमर समाद राखैत अए गेल? हम हिनकर धर्मपत्नी थिकियनि आ ई थिकाह हमर तपोबल-रक्षक।

पत्नीक एहि कथाकें सुनि बाबाक करेजमे आगि लागि गेलनि। ओ करुणी करैत राधेकें गारि देत बजलाह—"एहेन सपरतिम ! कनेक विचारो नहि कयलक जे ई हमर के थिकीह ! पलितहा बगिलेसू कहाँकें ! सीरा आगू नदी फिरलक। आ ई नौगी केहन छनिकटि अछि ? जकरा हम अनमोल सिंगहार कुंजेत छलहुँ से मरगिन भेल, नागिन !"

बाबाक परमादपूर्ण उक्तिकें सुनि पत्नी प्रत्युत्तर देत पुनः कहब प्रारम्भ कयलनि—"एगा छुमगा किएक होइत अछि ? स्त्री की पुरुषक जागीर थिकीह जकरापर सतत अधिकार रहैत जे जाति सन थिसैत रहय तथा आरनि सन जरैत रहय आ पुरुषकें ओकरा बिस तकरोपरिक पलखति नहि रहौक। ओ समय आब बीति गेलैन जखन सीता आ सावित्रीक युग छल। आब सभकें बराबरि संविधानमे अधिकार छैक। ई सामंतवादक युग थिक। एहि युगमे सभ स्वतंत्र अछि। ककरोपर कोनो बन्धन नहि"। ई कहि ठहाका मारि ओ हँसए लगलीह।

उपर्युक्त वाणी यद्यपि तथ्यपूर्ण छल जे पति-पत्नीक अधिकारक सीमाकें निर्धारण कयलक तथापि बाबा स्नेहातुर भेला सन्ता अपन सापत्नकें कठहुँसीमे पचलैत बजलाह—"स्त्री जे पुरुषक देहक सहभाग, आत्मिक पियनी तथा धर्म-सहधर्मक ओगरवाहिनी थिकीह आब उचरिक भए एहि दारिसें ओहि दारिसर बैसतीह आ हुनकर पति परसलाह सन भेल हुनकर पाछाँ पाछाँ कपचामे अपन गुमान बुझल। एतेक दिन पत्नी पतिक बात-कथाकें अंकें जैत छल आ आब पति अपन कनसुपती सन कानकें मूनि कनतोष साधने रहत, अपरतिम भए आँखिमे अन्हरपाती लगौने रहत आ स्त्री स्वच्छन्द भए कए काग-आग पुरुषक संग विहार करत आ फल भेमल ओकर पति, सैह ने कहाँक कहब थिक ?"

कुजिया बाबाक जाकट अपहुनकें सुनि हुनकर पत्नी खिहँसैत बजलीह—"तँ की स्त्री सदिखन थिरमी जकाँ नचैत रहए, टकुरी जकाँ घुमैत रहए, घरमे पसमोहि कए सतल पसेट काटय आ पुरुष आठि सन ठाढ़ भए कए ओकरा देखैत रहौक ?"

एवंक्रमक कथा बताबि बाबाकें बड़ क्रोध उत्पन्न कयलक तथापि ओ अपन अकरुणपर अकरुण एवं उत्साहुल होइत बजलाह—"हूँ ! हूँ ! जे हुए बहुत से बड़ लाभ का अकरी लाभ अपार। मेहनति-मजूरी करय पुरुष आ मटकी मारय मालिक। पुरुष स्त्रीकें कतबो साज-शृंगार करबो किन्तु ओ एक एहन बहुर-फलैल चिकीह जे हुनकर अहमक मोहाँसे सबटा अनाप-शनाप खर्च होइत आ जिहुक समस्त पुरुष आकाशक तारोपरि तोड़बाक हेतु उद्यत भए जाइत। स्त्रीक भृकुटीमें तँ सुख आ प्रलय रहैत। जँ अनुकूल रहैत तँ अमृतक आलय आ प्रतिकूल रहैत तँ मृत्युक महुर बनि जाइत। दोसक खान, अवगुणक खानि तथा ईर्षाक प्रतिमूर्तिक जीवन तखने सफल जिक अखन लोकक मानक स्थान उपलब्ध होइत आ ओ दाम्पत्य जीवनक बिना कखनहिं सम्भव नहि भए सकैत।

पति आ पत्नी नदीक दु कूल जिक जकरा दुनुक सोनितसँ निर्मित सुन्दर अपूर्व ओहि दुनु कूलकें मिलबैत अछि। एक दोसराकें समीप अनैत अछि आ आपसक विभिन्नताकें मेटि दुनु सम्मिलित करबे ओहि अपूर्वक विकासमें प्रयत्न करैत अछि। की मोल नहि अछि जे अहाँ एक बेर अखन तपस्या कए कनि रहुत रही तँ रमण कोना मिलतैक हुन ?"

बाबाक तर्क सफल भेल। बीतल बातक संस्मरण आ रमणक चर्चा हुनका पत्नीकें विह्वल बना देलक। आँखिमें अजस्र नीरक धार बहए लागल आ बाबा हुनका कोंचैत अपन अकपोलासँ ओहि नीरकें पोंछैत बजलाह—"तपस्या अनु करी। अपन घर चिक। एतहिं आकाश रहु।"

बाबाक एहि आग्रहकें आगमें भऽनि हुनक पत्नी अनुत्तर बैत बहए लगलीह —"कोना रहब ? हमी की कोनो उपरिक चिक जे एक बारि तँ दोसर अरिपर बैसति ? अखन राखेसँ आब विवाह कए लेनहुँ तँ फेर कोना दोसर पुरुषक अंकमें जाइ आ विशेष कए एखन अखन हिनका अपन कोनो चिन्ता चिकिर नहि रहि केवल हमरे हेतु सदिखन व्यस्त रहैत अछि आ अहाँ तँ दसहारी छी। ताहूपर राखेकें एक हमहीं टा छियनि किन्तु अहाँकें तँ प्रेयसी अछिये। तात्पर्य अपनुकसी किएक मोल देब।"

पत्नीक अवहेलनाक वचनकें सुनि दुखिया बाबा निराश भए गेलाह तथा हुनू हाथे माथ आ कपारकें पिटैत जोर-जोरसँ विलाप करए लगलाह। समीपमें सुतल बाबी उठलीह। राधे सेहो दौड़ल अएलाह। बाबाक निश टूटल। सम्मुख राधेकें देखि फड़ाठीसँ मारब प्रारम्भ कयलनि। अपनेट कहाँ कें! माय, पितियाइन किछु नहि सुनय। सो हमरे परमे हाका देलह। पलिस कहाँकें हमर पत्नीक संग प्रेमालाप करताह!"

राधे अकचकाइत पुछलनि—"बाबा की बनकि गेलहुँ अछि। हमरा एना किएक मारैत छी?"

"बनकलह सोहर माय आ पितामह। सो रमणक मायसँ प्रेमालाप करैत छह।"

"हुद माए गेल। मुँह बन्द करू। अन्यथा आब हमहु हाथ छोड़ि देब।"

बाबाक दोसर पत्नी जे सभ किछु देखैत ओ सुनैत छलीह भितरसँ उग्र रूपकें धए आपहि भए दौड़लीह—"अकटी कहाँकें जेहने अपने छथि तहिना अनको पुत्रक छथिन।"

ओना तँ बाबाकें बोहिना बाबीसँ सम्पत्तिक अधिकार छहनि तहिपर हुनक एहि तरहक आतिश कथाकें सुनि ओ अरबधि कए बाबीकें अनटोटल बात कहि-कहि उपेखब प्रारम्भ कयलनि। बाबी तमसमाइत बजलीह—"खबरदार! जँ एको बेर हमर गालोपरि लेलहुँ कि एहि खापड़िसँ चानि तोड़ि देब या समटा रुंगी बाहर कए देब। पहेन अनटोटल कथा बजनिहार दएह टा छथि। तखनसँ अकबोल कथने छथि"।

राधेक तनतनी तँ बलवे छल। हाथमे लाठी लए ओ बाबाक माँथपर आब प्रहार करताह तँ आब। एहि त्वरन्वाहुल्यक बाह रुकतो नहि पेटैत छलैक। चुपचाप फजीती भए रहल छल। सभ कयो आसमर्थ मचौने छलाह। बड़ अजगुत समस्या छल। लोक यद्यपि प्रराहेरि कए रहल छल। किन्तु किओ माननिहार नहि छल। अन्तमें सगड़ा पंचक अधीन सौंपल गेल।

लोकवाक सुनबाहि प्रारम्भ भेल। बाबी कनैत आँचर पसारि दिनकर-लोकनाथके दोहद दैत अपन सतीत्वक प्रमाण प्रस्तुत कयलनि। राधे हाथमे हरिबंशक पोथी लए अपनाके निर्दोष करार कयलनि आ दुखिया बाबा बड़ प्रेमसँ अपनाक सम्पूर्ण कथाके पंचक समक्ष वर्णन कयलनि। ओहि कथाके सुनि पंच लोकनि हँसैत विदा भेलाह, बाबी सासुके अलगटेंट, अलगफुलगी आदि कहैत खोटा-पोढ़ी सुनाए चलतीह; राधे अन्हरोखे हाथमे कोदारि लए खेत कोड़बाक हेतु चलचाह आ दुखिया बाबा ऊँच स्वरमे गाबए लगलाह—"करम गति टारत नाहिं टरय"।

ज्ञान पचीसी

अरुअयल आलबल कथाके ज्ञानक बात कहुबामे पूर्व-पुरानलोकनिके एतेक अहाक होइत छनि आय। एतेक अहाक ने तँ महाभारत कहुबामे कथाके वा ने बृहत्कथाकार गुणाढ्यके भेल होयतनि। दुनिया बाबाके एहि तरहक कथाके बोलनामे जे आह्लाद होइत छलनि से आय: शारिरि-रहोजिक गप्प बैसबोमे नहि भेलनि। आरक गिलासके कण्ठक नीचाँ डारैत बाबाक ज्ञान-पचीसी प्रारम्भ भेल तथा ओ राधेसँ कहुए लगलाह—"हौ! आब लोक उपरपट्टू, आ उपरपट्टू भए गेल। की पुरुष, की नारी आ की नैनाभूटका सभके एकै उपरी-विपरी लागि गेलैक अछि। देखहु तोँ अपने बाबीके, केहन कठकोकाकि छथुन? एहेन कोनो दिन नहि जिनैत जहि जखन ओ आबा भात आ पाछाँ लात नहि देतीह। हौ! पुरुष आ स्त्रीक कतेक आत्मक सम्बन्ध छलैक! स्त्री पुरुषक गराक माला छल, से आब बोझगर डेकुल भए गेल। स्त्री पुरुषके अपन पाचक सिनुर पुरैत छल से आब ओकरा चैन पुरैत अछि। हौ! की कहिअहु, स्त्री जे परपुरुषसँ अपनोमे आलाप नहि करैत छलीह से आब प्रेमालापो करैत अछि आ पुरुष आन्हर आ बहिर भए कए राम जिनु देखैत आ सुनैत अछि। हौ अनकर कोन कथा, देखैत नहि छहुन अपने बाबीके! मुँहमे पान दए कोना बोयो-पूताँसँ कठहँसी करैत छथुन आ जँ किओ कटगर बात कहैत छनि तँ कोना मुँहपर आँचर राखि कठसाज देखबैत छथुन!"

दुनिया बाबाक कथाके सुनि राधे प्रतिवाद करैत बजलाह—"बाबा! बाबीक एना खिवान्ना सदिखन किएक करैत छिथनि? अहाँके हुनकासँ कथीक अड़लीस अछि?" राधेक एहि प्रतिवाद के सुनि बाबा हँसी सँ मुँहके बबैत बजलाह—"हौ! अड़लीस कथिक रहत? हम की आजुक इसकी छी जे स्त्रीके "ट्रान्जिस्टर" बना कए घरमे लटकोने रहब। लोक सुनैत की देखैत रहत आ हम गहवायब! हौ! स्त्री जीवन-सहचरी थिकैक। सेवा-टहल

कारबाक हेतु लोक विवाह करैत अछि ने कि आन पुरुषसँ पुत्रोत्पादन करबाक हेतु, अथवा सन लड़काक हेतु आ उपरान्त भए कए जनका घरके उजाड़ कर करबाक हेतु।" बाबाक एहि उत्कट कथाके सुनि हमरे अकचकाइत पुछलनि—"हँ की बाबीक आचरण पर अहाँके संका अछि?" बाबा गुनगुनाकेरो सन विनुवैत बजलाह— हौ ताकर कथिक रहत? कोन जेनका सन हुनका कप सनि जे दिवसाधिक सन लोक फलिता भए जायत। खटवालरिक कप आ बहुरोक बाँचि करता उमरिबौलैक? लगन आमल अछि नँ हुनकर अमरोटल कथा आ बोल अकिसपर। मुदिबन बाबक अटोड़ी कोइब अकालेक काज चिकैक कीने" बाबाके उत्तर देन रानी कहलनि—"बाबा बाबीक बाल नँ बतिल होइते छनि किन्तु की अहाँक दोष नहि रहैत अछि? अहाँ कोन हुनकर कथाके अक जैन छिलेक? जँ बाबीक कथा अंगुआ होइत छनि तँ अहाँक कथा सोसे कलान। एहिपर कुलमकुलो आ कुकुर-कलाउस नहि होइत तँ की बपुक बर्ता होयत?"

रानीक एहि उत्तरके सुनि बाबा बजलाह—"हौ! ने तँ सरिपहुँ दोष हमरो अछि मुदा रानी नँ आखिर रानीये चिकैह। विषयके बिना बुझने अर्थायब आ बलमपुजनी मारब की नीक चिकैक? हौ! आब नँ ई अधेर भेलीह किन्तु एहने अपसराहि आ अपरोजक विचारोक मयपय छलीह! चतुर्थी रात्रिक कथा चिक। बर-कनिया नीक-नीक गप्प करैत अछि किन्तु तोहर बाबीके एतेकबरि पनचलि कनए जे पोरुक काज परि अपन मानक एकमात्रके नुकौने रहलीह। तेनहीं सन आँखिके नचबैत अपन कोनहु-मरहनिके उत्तर-दक्षिण घुमबैत सराबरि बजलीह— बहिनाक घर केहुन सिरीमन्त छथिन।' हौ! कहह नँ केहुन बकहु कथा चिक। पुत्रक कप कतहु बलमोछा आ मूनपी भनैक अछि? ओकर कप विद्या चिकैक। एहि कथाके सुनि सम्पूर्ण देहमे फोका उठि गेल। एक हाथमे सोंट पकड़लहुँ आ दोसर हाथमे मुक्तिमार्ग आरम्भ तँ कयलहुँ मुदा तोहर बाबीयो की कोनो अड़ेका छलीह जे पड़ियलीह। अपदलक ओकुली सन ओहो जे ओहि महाभारतमे पुटि गेलीह। अकचोल भए गेल। पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण चारि दिशमे हमी-हेना छुटए लागलि। हौ! विवाह

करइ, जो कोहुबर लगये चचलमूल बनि गेल। किन्तु सुकुर एतबेक छल जे ओतए मे तँ बचपन छलाह आ ने हमरो' मनिमनु छलहुँ जाहिसँ उलटाक विचार नहि भए सकल।"

दुनिया बाबाक एहि मनोरजक कथाकेँ सुनि राधे पुनः कहए लगलाह—"बाबा! की ओहू समयमे अहाँ एहने सुन्दर रहो जे बाबीकेँ पसिन नहि भेलिअनि? की बाबीक बापक' आहुरजाबी लागल छलनि जे अहाँक कउलेज छन गाल कोठी सन पेट, टिल्ही सन टाकेँ ओ देखि नहि सकलाह?" राधेक एहि शंकाक समाधान करैत बाबा कहलाह—"हौ! ना' बड़ सिनेह पड़ैत छह! हम की कोनो अपलाह छी जे ओ हमरा दुसितथि—हौ! ओ ज्योतषी छलाह। मुखुर्गहिलासे हमर लग उचरल छल तेँ ओ लगाबह लग हमरा बचे कए हमरा अपन जमाय बनौलनि।

बाबाक एहि अ हवाब बचनकेँ सुनि राधे कुबाहुल हुइत कहलाह—"बाबा! बाबीक बापकेँ कतेक बहोरिया देखौने रहिथनि से नहि कहि। की घरो-दरवाजा ओ देखने छलाह?" बाबा जवाबदेह कहलाह—"तेँ की तोरा भोने ओ बड़ बहुलेल छलाह जे बिना देखने-सुनने हमरा लए गेलाह? हौ! घर आ कनियाँ हुनू लेहल मे विचार छ्रेक जे ओ सुनने मे निश्चिन्त करा लेलनि आ जँ से नहि रहितैक तँ आइ गोरासोबनि ई रामलीला नहि मे देखलह। हौ! कन्यादानक समस्या अनेक जटिल छैक तनेक जटिल स्त्री पुरुषक समस्या छैक। देखह, तोहर बाबी जँ अमहरो करैत छथि तँ भानसो-भात तँ करैत छथि। हौ! एक बेरक कथा थिकैक। हम रिक्शा कए जाति पड़लहुँ। बामा हाथमे कनेक चोट लागल। तोहर बाबी अहुरकोहुरा सन सभा टा बर्तनेँ बीचि मे गेलीह। हौ! सभ्ये कहैत छियह ओ अगड़ा भगेँ करतीह किन्तु भातक तरमे तरल तरकारी, छाम्ही, अचार राखि कए हमरा खुआतीह। तनिसँ विशेष कए की देतीह? कहह एहिसँ बेशी पातिव्रतक और कोन काज भए सकैछ?"

राधे कहलाह—"बाबा! बाबीकेँ मातक तरमे तरकारी इत्यादि रखबाक की तात्पर्य छनि?" बाबा तरफर उत्तर देन कहलाह—"हौ! बुझलह नहि,

आज परक वस्तु तँ देखबामे अबैत छैक आ बोधा-बूझा देखलते मे समाधि लैत छैक। कहहु जँ लोहर बाबो अपेजी पढ़ल रहितथि तँ एना अपना पत्निकेँ खसुरबितथि ? हो ! देखैत नहिं छहु जँ कतेको पति-पत्नीमे विचारक गफलति भेलैक कि तलाकक समस्या उठल। उठबो कोना नहिं करतैक ? बन-कनियाक आज थोड़ेक विवाह होइत छैक। विवाह तँ होइत छैक धनक। कनियाक रूप गुण पर के जाइत अछि ? कनियाक बाप जिनगीहुक कुल-मोन्नरर के विचार करैत अछि ? जे तेसर अनेक दैन छैक ओ बातेक श्रेष्ठ मानल जाइत अछि। भले ओकर किया कर्म अपवादे रहौक। हो ! मुदैन छी जे लोक आब बर्जन अछि जे जेना लोक मरल-जरल, हानी-घोड़ा किनैत अछि तहिना अनाथ लेहो किनैत अछि। सबसँ कुल पत्नुक मोल की ? जँ वस्तु पसीन भेल तँ उलम नहिं तँ की ओ बदलल नहिं जाए सकैत अछि।

बाबाक सम्भोर उत्कट कथाकेँ सुनि राखे अचम्भित होइत बजलाहु — "बाबू ! तेहन भजदुन बाप कहैत छी। की समाज आब एहन फूहर भए गेलैक अछि जे सबटा बजनकेँ नचनुन्ना कए बजनुन बना देलक ? राधेक प्रश्नक उत्तर दैत बाबा पुनः कहल प्रारम्भ कयलनि — हो ! समाज आब छैक ? देखैत नहिं छहु, लोक आज केहन फूहरपन भए गेलैक अछि ? बजारो बजो कहुखिनार छैक ? बजारा जे मोल होइत छैक तेहन दैन अछि। बजारा अहल फजरेँ छैक नजर तेहन समय जन आबैत छैक। तथापि लोक कहहु समाजक बान्ह कोना नजरल होयत ? हो ! एक समय रहय जँ बर्ती अपमानहु काज करबाक कि समाज आकर्षण देबक। ओकरा फजरति करा बजनि विवाह देबक आ एक हेतो संशय अछि जे बरक विवाह तँ भेलैक किन्तु दिरागमन नहिं भए सकलैक। बर मानुस पेटुकाहु लगले रहल आ कनियाकेँ लेहुन ने फुनगुनी उठलैक जे ओकरा फुसकानक लोभेक बर पुत्रपर्टन बनि गेल आ कनियाँ बाबी आब बरक गारक मरकसाहक पुतला बनि सूर्यक पुत्रमरण लागल हो ! एहेन दिनधनि बरक बाप कनियाक बापक ओकरा बरियाती लाइकए विवाह करा जाइत छल आ आब कनियाक बाप कनियाक विवाहे बरक पसीन करनि आ कनियाली लाइ बरए बरक अपना आगाए विवाह करौतैक।"

जनवत दुखिया बाबाक ज्ञान पचीसी चलिते छल कि एहि अन्तर हुकाशल-पियासल हनहुनाइत बाबी औताए अपलीह आ बाबाके कहब प्रारम्भ कयलनि—

"बाबो एहि फटकफन्दसँ फनन्नति भेल की नहि? भानस-भात भए गेल। खयबाक अछि तँ चलू नहि तँ हम गुजरलहुँ रावन बलाग पेट अलबलाइत तँ टकटोपिआ खुनि देब।"

बाबीक एहि चेतकार पर बाबा ध्यान नहि दए ज्ञान पचीसीके ओरिहि स्थगित कए अनला घरक दिस हुनकहुँ विदा भेलाह। राधे बाबाक पछाँ-पाछाँ तेहो चलला। बाबी भोजन परसलनि। राधे जिज्ञासा करैत पुछलनि—"बाबी! तरकारी कथिक थिक?" बाबी उत्तर देत आग्रह कयलनि—"राधे बाबू, दुआवल बाछ-रुक तीमन भेल अछि, कनेक चिखबैक?" राधे बाबीक आग्रहके मानि लैलाह। भोजन परसल गेल। अपूर्व स्वाद। बाबी भासक फोंट छोड़ा छोड़ा कए बाबाके देत छलीह आ बाबा एमसँ भोजन करैत बाबीक भोजन विन्यासक प्रशंसा करैत अकड़ाएलगलाह—

"मंगुरी मकर प्रयासे,
गई गंगा तर्पण कें।
पोथी सर्व लिखीनि,
रेहु संख्या न लिखले॥

●

मनक-मनोरथ

बालीक पुत्रकारके अकर्मेंत यद्यपि दुनिया बाबाके पुत्रका पदि गेल सुनलि किन्तु जखन बाबी अपन बचनक अनुसार बाबाक रहन-सहन गुपानके मदिरापेंट करए लगलीह तँ बाबाक समस्त शेष जोसमान करए लागल तथा बाबा अपन सम्पूर्ण मोह एवं मोहके तजलि बालीके सुनलि छोड़ि भगवान बुद्ध जन संघक लाजमे बाहर भए गेलाह जे सत्य ने तँ राजसक हेतु ने भोगक हेतु वा ने स्वर्गक हेतु छल। ओहि सत्यक पाछाँ मात्र एके गोट भावना छलैक आ से छल बालीक अशान्ति एवं अप्रसन्नताके अंकित। अतएव बाबाके उबी-बिबी लागि गेलनि तथा ओ जखनिबाहन घरे-घर, गामे-गाम एवं पाछिम-पाछी भटकए किर्यंत भोजाय लगलाह। एहि तरहें बहुबाहन घूमैं-फिरैमे कतेक दिन बीत गेल। बाबाक शिकुकिया सनक गाल चोकड़ि कए चोड़ा भए गेलनि कदोमा सनक पेट सटकि कए पोथरि भए गेलनि तथा छीनहाशिरि सनक पीठ धसि कए छोलियाक पाट भए गेलनि।

बाबाके एहि तरहें चाटकबन्दमे पकड़ियारी कलैन एवं पोलीमाल होइत एकटा प्रेतसँ भेंट देखना गेलैक। ओ बाबाक सोझमे प्रकट होइत बाजल—"हौ! एहेन बहेरपन सन किएक बनल छह जे एना हेराइ गेलाह? हौ! पुरुष मात्र थिक, आ स्त्री ओकर लोखड़ैआ। स्त्री जँ घरक सरनि थिक तँ पुरुष ओहि सरनिक मरनिक मरुह। तखन कहह जँ एकक दोगदानमे बिछोह होइत तँ ओ मात्र आ घर कोना रहतैक?"

प्रेतक एहि कथाके सुनि सुनिया बाबा अधरबकू भाटा सन अनुभवित बजलाह "हौ, सुनिसराड़ी! कोनो अकालसँ भेंट भेल होयतह तँ एना हेकड़ी बघारैत छह। जँ साउगक पाला पड़िगह तँ कठपुतरी बनि जाइतह। आकरासँ सधिमन कन्नी काटिगह आ कनतोप सन्धिकए अपन कनमुसली सन कानके मुनि ओकर गंजनके सहैत रहितह।"

बाबाक एहि कथाकें सुनि पैतकें बाबाकें अधिक चेतावल उचित नहि बुझना गेलैक। जो बाबाकें बहुतारि कए स्वर्गक नन्दन वन भए सेल तथा कल्प-वृक्षक छिहुरिये छोड़ि जो ओताएसँ घसकि देलक।

कल्प-वृक्षक मन्द-मन्द बसात एवं मधुर छाह तर बाबाक सम्पूर्ण थकनी मेटा गेलनि। हुनका भूख लगलनि जा एहो चूड़ा जयबाक इच्छा भेलनि। लगले एक व्यक्ति हुनका लेल खासभोगक चूड़ा, कड़ाह दही आ एक कोहा चीनी अनलक। बाबा यदि पेट भोजन कयलनि। पाँचजोगरलें बाबाकें औंघी लगलनि। हुनकर कल्पनी सन बाँकि घुमए लगलनि। इच्छा भेलनि एक गोट खाट। बाबाकें इच्छा भेलनि जा तकक एक व्यक्ति भोनए एक गोट खाट अनलक बकरापर तोसक आ सकिया ओछाओल छलैक।

बाबा छिलबट्टी बहुक पान निकालि कए खएलनि आ प्रसन्न भए बेकरैत जहिं खाटपर ओलरि गेलाह। मुकोलक बाबा कल्प-वृक्षक मादक बसात आ अपन गेट बाबाक बहुमन भोगकें ओर अधिक बढ़ौलक। बाबाक डेहुन टटाय लगलनि। इच्छा भेलनि उदीयमान सूर्य सन मुँह, बिजली सन सह-पह करैत देह, लाल कमल सन अरुणाभ आँखि आ निलकोइलाक फेड़ सनक ठोर बाबाकें सुन्दरिसँ पयर दबयबाक। बाबाक इच्छा जा कल्पवृक्षक छाह। तुरन्ते एक गोट षोडसी बाघिनि सन दमकैत हंसिनी सन ठुमकैत अपन गोर बाँक तरसँ रक्त-लालिमायकें झलकबैत ओहि खाटपर बैसि गेलीह। बाबाक मोन पलमलित कए लगल। हुनका अपन धनुषाँक राति मोन पड़लनि। बीती बिछुरीक रैह सन बाबी अकस्मात् कोहबरमे आबलि छलीह। अपन तारुण्य विकासक संग शरीरक सौन्दर्यकें छिटकैत छलीह और बाबा धुकधुकाइत छाती, बहलैत मन आ कँपैत हाथसँ बाबीक मुँहपरक घोमटकें हटौने छलाह। समटा ओहि रमणी रत्नकें देखि स्तब्ध भए गेलनि। बाबा सुन्दरीकें अंक लगाकए ओकर भाल चूमि लेलिन आ बड़ आह्लादसँ आकर संग प्रेमालाप प्रारम्भ तँ कयलनि किन्तु एकाएक कथाकें बांकि गेलनि जे कतहु बाबी तँ ने देखलनि आ जो कहलनि आ अपन छातीकें पिटैत बाबाक गंजन तँ ने करए लागथि। बाबाक जागंका आ कल्प-वृक्षक छाहुक फल। बाबा एहि तरहें सोचिते छलाह कि बाबी अनबोल

करैत यहाँ कन्यान्तर ओतए पहुँचि गेलौह तथा बाबाक अहङ्कार कोनमे देखि
अत्यधिक भावनामें उपस्थित भेलिह। आइयरसँ हुनका समाधानक हेतु दौड़लौह
कि बाबा कनछी काटि बोतलसँ छिड़कि देलनि। बाबीक पटकबीयो सँ अहङ्कारे
एल। चमचुहरी सन कोही बाबाक पाछाँ लगलीह। बाबा आगाँ आगाँ दौड़ल
जाए रहल छलाह आ बाबी पाछाँ हुनका पकड़बाक हेतु चिल्हाकि सन अपटल
जाए रहल छलीह। जँ बाबा बाइसा छलाह तँ बाबी सनकही, जँ बाबी छिनार
छलाह तँ बाबी छुनाहि आ जँ बाबा मुरजुरबी छलाह तँ बाबी मुरजुरी अर्थात्
परिस्थितीमे बाइसकें अधिक सहना नहि छलनि। आखन हँ स्वरूपाङ्कन चलिते
छल कि कन्यान्तरक छातीमें मोचड़ि उपजि गेलाह। जो प्रेम पुन आसमान
आ बाबाके सहन ने चमका देनक जे जो अपने आइलमें बड़ाय बाँ लगलाह।
बाँट विशेष लगाबासँ बाबाकें करए लगलाह तथा बाबाक आँखिसँ महीन्हा मोर
झरए लगलनि। लगलथिन सुनल लोकक मिथ्या दृष्टि पेनेक। बाबी तहा यौकि
उठलीह तथा आइलमें बाबाक हुनकि देखि ठहाका मारलनि। बाबा ने बीच
ठंमीकें सुनि तथा आइलमें हुनका लहि। ठाढ़ देखलनि कि दुन मन केक
प्रारम्भ कयलन। बाबाक मनोदशि देखि बाबी हुनका बोधबाक हेतु सेहो
दौड़लीह। बाबा चिल्हाकि मानए बाला नहि आ बाबी बाबाकें किछ आ कोना
कोनि दिलनि। एहि लड़ाइमें आर भए गेल। बाबी तेहो अपना पहुँचलीह
और बाबासँ निवेदन कयलनि जे आ [illegible] एकक दिनकें तुकबाज छलाह?
बाबीक पटकक उत्तर देत बाबा कहलथिन बजलाह आ अहाँ कोना प्रोत्साहन
पहुँच देलहु? एना प्रभु बनबाबी। लड़ाइ छोड़ू। एक दिन यदि अपे
अन्हारवाली मायक छल किन्तु आब अहाँ जिवनक पथ पहिने बनल।'

बाबाक एहि कथा कें सुनि बाबी उकरैत बजलीह—'तँ कोन अपराध हे
हमरा पकड़लहुँ यदि? और कथिक अन्हरवाली लागय छल ते किएक
नहि कहैत छी?'

बाबीक एहि पटकक उत्तर देत बाबा हुमकैत बजलाह—'हमरा जोहू
बालक उर से की नहि अछि?' बाबाक एहि अपवाद कें सुनि बाबी सरोष
बजलीह—'तँ की हम अन्हर चूसा देब? तँ देल, हम आब जाइत-आइत
छोड़लहुँ। अपने किएक नहि करैत छी?'

बाबीक कटु कथा कें सुनि बाबा गुम्हरैत बजलाह—"हँ ! भानस-भात नहि छोड़ब तँ गाछ कोना हाकब ?"

बाबाक एहि मारुख कथा कें सुनि लोक कें ठकमुरी लागि गेलैक। एक दोसरा क मुँह तकैत सभ गोटा बाबाक जोहि नवका अनुसंधान पर चकित छलाह अ बाबी सामसे लाल भए गेलीह। हुनकर आँखि गुम्हारक आवा भए गेल। सर्वाङ्ग शरीर काँपए लगलनि और मुँह सँ करिया करेज सन बिए कें उगलैत ओ बजलीह—"तँ की हम डायन छी ? ककरा साँय-बेटा कें खेलिऐक अछि ? के के उपरा दिलक अछि ? जोला-गुणी माँगा कें आहर कर नहि तँ कुपकर मरि जाएत।"

बाबीक एहि फुफकारि कें सुनि सभ ठहकैत बाबा बजलाह—"तँ अहाँ ओहि गाछ लग कोना हमरा देखलहुँ ?" बाबी सरोष बजलीह कोन गाछ लग ? हम कोन गाछ-बाँसे ओआरक फिरैत छी ? घुरघुरा तँ कहने अछि अहाँ कें जे मन कें घुरछीयबैत अछि।"

बाबीक एवंक्रमक कथा कें सुनि बाबा ओहि प्रेतक चुलपन, कलह-बुझक तथा अनर्थ प्रसंगक सम्पूर्ण कथा कें कहल। ओहि कथा कें सुनि लोक आश्वस्त भेल और बाबी मुफ्ती दैत बजलीह—

"हम तँ भरि राति एतहिं छी। हमरा कोन गेहर-बाहुर अछि जे जाएब ? अजगुत बात आ काज तँ नहीक थिक।"

लोक जे बाबाक अनटोहल कथाक अभ्यस्त भए गेल छलाह, हुनक एहि घटनाकें सुनि ओकरा आकस्मिक बुलि चकित भेलाह मा बाबी बड़ यत्नसँ बाबाकें चाह बनाबए लगलीह।

चुट्टाक दाग

कनगैया सन अपन परदनि के अनगबैत एक कर्मानि सन अनबोल कैलन दुनिया बाबा बजलाह—"हौ राधे ! आसमद कथिक चिर्कक ?" राधे बाबाक जिज्ञासाक उत्तर देत बजलाह—"हर मए गेल बाबा ! एना चिल्लक कोकनैत छिऐक ? विद्यार्थी सब करिआसुमरि छेलाएन छैक। परीक्षाक विरोध मे हड़ताल केने छैक और की रहतैन ! बाप कएए हरबाहि और पुतक नाम दुर्गादास।"

राधेक एहि तरहक गुमसरक पर आसमैन बाबा बजलाह— 'हौ ! लाहर गुरुहरक बचार्थे किन्तु एहि मे दोष ककर ? जे पढ़ैक लगन ने परीक्षा ? ने तँ परीक्षा कथिक ? हौ ! परफेसर कें फारकेनी सँ छुट्टी छैक ? लाहु मे आब बचन किनु पढ़नहि माक उपकुलपति वरि कनैत अछि तँ कथिले पढ़त ?"

बाबाक एहि कथाक प्रतिवाद करैत राधे बजलाह—"अहाँ तँ आब सठिआए गेलहुँ तेँ आसैन छिऐक। एतेक राम हाकिम-हुक्किमान जे छैक से किनु पढ़नहि ?"

बाबा राधेक शंकाकें अस्वीकार बजलाह 'हौ आबक हाकिमक प्रभुता मे हम कहैत छिऔह और हाकिम की ? देसह हाथ उठाए कें लोक मिनिस्टर बनैत अछि। हौ ! एक समय छलैक जखन पढ़ब कें मोल छलैक, बुद्धि और विवेक कें लोक आकैत छल और ओकर समाज मे पूछ छलैक और आब ककरा कें पूछैत छैक ? अखबार नहि पढ़लह ? उपकुलपति कें घेराऊ होयत छनि और घेराऊ केनहार छै तँ परफेसर और विद्यार्थी। हौ ! जँ बड़ जेरगर पाप कएने अछि तँ उपकुलपति होयत अछि और जँ अभागदशा उत्पन्न होयत छैक तँ मुख्यमंत्री। सभकें पुरसाक ने निस्तार भए जाइत छैक !'

बाबाक एहि आत्मालाप उत्तर देत राधे बजलाह—"ई सभसँ नीक काज कोन छैक बाबा ?" राधेक अकुलाएल उत्तर देत बाबा बजलाह "हौ ! विश्व-

विद्यालयक कोनो विभागक हेड प्रफेसर बनब। बकस टाका, जबाबदेही कतहु ने ? मे एन्टि करप्सन, जे सी० बी० आई० आदि कोनो इनक्वायरी। अपन बेटा, भागिन, भाइ-भतेजा सब के फन्टबलास दए दिअौक। केओ पुछनिहार नहि। ही एहि मे जे दुश्मनी समाजोन अपन छैक से हँ हायसो के ने मात करैत अछि ? हायस हँ एकहि बेर प्राण हेरि लैत छैक किन्तु हेड प्रफेसरक मारल भरि जीवन घुसि-घुसि के मरैत अछि। ही एतेका दिन गुरु और शिष्यक सम्बन्ध बाप-बेटाक सम्बन्ध छलैक और आब जँ कोनो सुन्दरि कन्या पढ़ैत छैक तँ ओकरा प्रफेसर बाबू केसीरा बुझैत अछि ?'

बाबाक एहि कथा सँ रामे विस्मित होइत कहलाह—"बाबा एहि मे प्रफेसरे टा के किएक दोष देल छिअैक। समाजक दोष वर्ग नीक अछि ? केहुन-केहुन लोक अपराधक काज करैत अछि से सभ की अहाँ नहि बनैत छिअैक ?" बुढ़िया बाबा ठहाका मारि कहलाह—"हो ! सत्ये आब ककरा दोष देबैक ? सभ के एके बसात लागि गेलैक अछि हो ! एक गोट बड़ मनोरंजक कथा कहैत छिअह जे सुनै चिकैक।" ई कहि बुढ़िया बाबा कथा कहब प्रारम्भ कएलनि—

"१९६५ ई० क फागुन मासक कथा थिक। गामक ५५-५६ वर्षक एक मनोरंजक ग्रामीण हलेस्सह में आबन अपन बनैत स्त्री, पुत्र पुत्र-वधू, पुत्री तथा आन-आन परिवारक लोककें छोड़ि बाबाजी बनल नसल कलैक दण्ड शाधु-महात्मा अंगारायें पुटल छलाह। कोना हुनका आरबल-पोरीन महुरबी देने रहथिन तथा कोना हुनकर स्त्री भोसमें हुनका अपन हाथक चानीक चूड़ी, माथक मेंगटीका आ गलाक काठा अरवा चातरक संग देने रहथिन, बेटा बनैत हुनकर चरणपर माथ रखने छल, पुत्र-वधू अरवा चाउर, सुपारी एक टाका भोसमें देलनि तथा पुत्री चरण पखारि चरणोदक लेने छलीह जे आब आध्यात्मिकक रूपमें परिणत भए गेल अछि। सम्पूर्ण गाममें रामनाथक त्यागक चर्चा सँ छलहे आनो-आन गाममें ई एक गोट उदाहरणक विषय बनि गेल।

साधारणतः लोक स्त्रीक मृत्युक उपरान्त दोसरो बनैत अछि किन्तु रामनाथ पत्नीक उद्दाम रूपकें छोड़ाक हाट तथा मायाक आन बुझि छोड़राहें मुक्त

सेनाहु। छन-छन्दनि, छाम-छाम आ पर्दा-पैसाक मतलबि हुनका अभाव नहि छलनि किन्तु बोकरा जी भोरक बुतेल बुतलनि। आरबन-कोयीन सेमाक आर बाबक बाहर हुनका हेतु एक गोट कुर्सी बनल गुलाब, बेली-चमेली केलकी गेंदा आदि फूल लगबाओल गेल। अशोक, बाबू, सपाटू आदि वृक्ष रोपल गेल। बड़ी पटा एवं तालक ध्वनि से जो कुर्सी स्वर्गित होबए लागल।

रामनाथ रामदास बाबा बनि गेलाहु। भिखारीन हुनकर वृत्ति छलनि तथा कमण्डल, झोला आ चुट्टा निजी सम्पत्ति। हुनक वर्ण, पाकल केश, लाल-लाल दाढ़ी गेरुआ वस्त्र, कन्ठा पर झोला तथा हाथमे कमण्डल आ चुट्टा सए जो जखन गामसँ भगवान्‌ निकलथि तँ कहरो कनिष्ट आ बड़कारो विश्वासिक बनैत छलैथि। सुदर वस्तुक जो अहिमसँ कोन कृत्रिम प्रतिकूल छलन्हु से आहि समय चरि लगाल छल।

एवंकारे जनमनलसँ आध्यात्मिक चेतनाके जगबैत माया एवं ममताके काहि बाबाजी रामदास नँ वैराग्यो वृत्ति संग्रह आ हुनकर गामवो पाबी चर्म दिनक अभ्यन्तरे प्रियतमक वियोगजन्य वेदनाक पारसँ दग्ध जीवनव्यापिनी विरहाक बन आपन अन्तर मनोहरे एतदि छलैथि स्वजन्मिनी मनोहु

बाबाजी रामदास नँ पहिने गृहस्थाक सात्रक संग माया आ मोहके पैरसि गेल छलाहु। अतएव आहि साधनीक निर्माणक लै तँ हुनका कोनो हानि नै कोन विषाद। नँ कोनो हेतु हुनका चिन्ता छलनि नँ आ छल समयपर ठाकुरक पूजा, जपक ध्वनि आ कहीं-पटमे पाठ वेश। एहि अवहु समय विकल गत बाबाजीक अन्तुमे सेहो बहुतो नँ आपन किन्तु बेगरजना हुनकर बनल बनैत गेल, महिला हुनकामे रहस्यमय परिवर्तन परिलक्षित भेल।

बाबाजी रामदासक मात्रक पुत्र फकीरा जखन मनो एवं चारि वर्षक एक-मात्र पुत्रक भार विधवाके आधारमे रहैत छल। फकीरा सकोची, मुर्खिल तथा परिश्रमी रहितो निर्धन अवस्थाक छल आ ओकर इच्छा फकनी साधारि वर्णक एकमात्र वर्णिका मनुष्यकेँ कथा सन-सन आहि, दाहिमे सन बाँह, विस्फारित सन अधर एवं नासिक सन कंपकपाए छलैक। जो हंसगामिनी जखन आहनमे चुपैत छलि तँ हुनका आहत छलैक तँ आनन्दु सभाअन्हरमे बिजुली

उत्तरि भावन हो। ओकरा मानक सिन्दुर-बिन्दुकें देखलाहे होइत छलैक जे कतिपय इन्दु आधिकाए ओकरा पेंदि लेमे हो। जखन ओ हँसैत छलि तँ अधुनक पुतलका हँसैत छलैक। लांबक झोंटमें ओकर नाकक नकबेसर हिलैत छलैक तथा अंग-प्रत्यंगमें अनेक रीति पुलैत छलैक।

अकस्मात् बाबाजी रामदासक नजरि फेंकनीक दिव्य सौन्दर्यपर पड़लैक जे अन्य कारणसे ओहि उत्पन्न कयलकैक। ओकर उद्दाम स्वरूप मादकमय आँखिमें रामदासक नेह पौंकि गेलनि तथा दीवानक अनुभूति एवं भावनाक मधुर परिवर्तन हुनका अनुप्राणित कए कल्पित बनाबए लागल। रामदास जे भाग-मात्र दिनभर कहियो किछु छनक हेतु पुनक ओतए पाइत छलाह से आब दिन भरि ओतहि रहथि। फेंकनीक चारि अपेक्ष देखाक हेतु ठाकुरक भोगक केरा, पेड़ा आ मिश्री आनथि तथा अपन पुत्र मनतुसें फेंकनीकें साबी, साया आ लाही देखाक निकाहिक करथि

मनतुक चालीकें रामदासक एहि नाहुक व्यवहार नीक नहि लगलनि। ओ अपन पतिसँ बाबाजी रामदासक आचरणक विरोधमें तँ कहबे कयलनि संगहि फेंकनीकें ओक बजाय सेहो कहलनि। मनतुक पत्नीक एहि सहज अपवाद बाबाजीक कान्तिक मन कोमलिकें सेहो अवकोलनि आ फेंकनी तँ ओहिमें स्वच्छन्द आ स्वतंत्र भए गेलीह। बाबाजी मनतु पर पचेंडी बैसोलनि तथा ओकरासँ आम निर्वाहक हेतु गाम बीघा जमीन एकिरड़ी करबाक हेतु मान कयलनि। पंचैतीमें मामक मुकिया एवं आनो-आन किछु मोटे बाबाजीक सहायक भए गेलाह। ओहिमें प्रोत्साहित भए बाबाजी रामदास फेंकनीक पति फकीराकें कमबाक हेतु बंगालोनि पठाकए ओकर घरसँ फेंकनीपर पूर्ण अधिकार स्थापित कए १५ फरवरी १९४२ कें नव साड़ी, मंगटीका, कंगना मुंदि आदि आभूषण कए सजाइ कए लेलनि। मेसबा बन्धकें फेंकि पीयर धोती, सोहाग स्थानमें रेशमी चादरि तथा कमरबन्ध आ मुद्रक स्थानमें छड़ी सँ छाता धारण कयलनि।

मनतुकें रामदासक एहि अपमानित आ उपहासित कयलनि। ओ मामक लोक समक्ष अपन प्रतिष्ठा एवं बाबाजीक अशोभनमक स्वरूप कयगये निवेदनमें कयलनि किन्तु गाम जे राजनीतिक अखाड़ा, प्रपंचक जाल आ द्वेषक स्वरूपाकारक

कनेसे परिचित भेल छथि बाबाए आब शील, शिष्टाचार आ सामंजस्य बनए ? बकलुके ई क्यो प्रथम बेर तँ ओ दोसर मुटक कोपमालन बनल। अन्तर्योगक बकलुके एक गोट पुत्रित मुसलमान। ओ ओहि महत्वक शरणमे गेल छे राम-बाबाके लगभग सात वर्ष पूर्व आरमन-कोपोल देने छलाह।

महात्मजीक प्रणाम कए बकलु निस्तब्ध विनम्र भए निवेदन कयलनि—"बाबा ! रामदास तँ आठि गेलह।"

बकलुक कथनके सुनि महत्व विस्मित होइत पुछलनि—"क्या बात है रे ? साफ-साफ क्यों नहीं बोलता है ?

महत्वजीक एकंकनक कथनक उत्तरमे बकलु पूर्ववृत्तान्त रामदास बाबाजी एवं फैकनीक प्रेमाख्यानके कहलनि। महत्व एहि कथाके संत संप्रदायक हेतु कलंकक टीका बुझलनि। आर ओ पाँच गोट बाबाजीके बोलए जाकए रामदासके ठीक करबाक आदेश देलनि।

२० फरवरी १९७२ के ओ बड़े भोरक समय रहय। एगारह बजेक लहरियासमे ओ पाँचो बाबाजी आबि चूनी रमाय रामदासके बोलए बजौलक। रामदासके अविलम्ब ओहिमेसँ एक गोट बाबाजी पूछलक—"रे तुम ऐसा क्यों है रे ?"

रामदास बाबाजीक प्रश्नक उत्तर देब बाजल - 'बाबा वैराग-बोध अति कठिन, हम नहि सकब हो"।

बाबाजीके ओकर ई उत्तर अपमानित कए देलक तथा ओ कृपाधामके रामदासके राजमार्ग जानेबाक आदेश देलक। कृपाधाम २५-३० वर्षक हृष्ट-पुष्ट, बैच-बैच जटाधारी संत छलाह, ब्रह्मचर्य शरीरसँ टपकैत छलनि। गरीबमे मात्र रंगीले पाँच कोपीन धारण कयने, नहि दाँरक हुनकर पूरा छलनि। बाबाजीक आदेश भेलिते कृपाधाम रामदासक हुनू हाथ आ पयर रस्सासँ बन्हलनि। दु गोट बैच-बैच पूरा अपन हुनू काँच रखलनि या दु गोट ओतुने पूरा चूनीमे लपेटक हेतु देल। कथा बड़ाध्यानसे लोकक भीड़ लागि गेल। हमहूँ ओहि ठाम पहुँचलहुँ। हम एहि दृश्यके देखि विस्मित भेलहुँ। बाबाजी

रामदासक हाथ-पयर रस्सासँ बान्हल छलनि। बाबा कृपादास अवसर प्राप्त रामदासकेँ पुछैत छलाह।

बाबा कृपादास—"बचा रे अब तूँ एक बेरि गड़ासे गिर गिला तो जनम भर उसीमे रहेगा?"

रामदास—"बाबा जँ हम गड़ासे गिरिये गेलिएह तँ आज हमरा आहिमे रहए दैह।"

कृपादास—"रे तुम चिड़ाचिलार से भी बेगी भागती है? जब वह गेलिया के गड़ासे गिर गिया तो हमसे उनको नहि निकाला है रे? हम तो तुमको भी निकालता है। तुम केन बड़ा नहि निकलता है रे?"

रामदास—"बाबा हम जँ आज गुड़ुख बनि गेलिएह तँ आब आहिने लोक बनै छह।"

रामदासक एहि तरहक उक्ति बाबा कृपादासकेँ अत्यन्त तुष्ट बना देलक। ओ एक घोंट चुट्टाकेँ उपरान्त आहिमे रामदासक पीठ आ पीठ पर मारब प्रारम्भ कयलक। आठ-दस चुट्टा मारला पर कृपादास पुनः पुछलक "बोला रे अभी भी बोला तुम निकलता है का नहि?"

रामदास जे नारीक सौन्दर्यमे रसोन्मत्तक उन्मत्तता, कार्तिक मासक पुष्पकी एवं चन्द्रमाक चकमक देखने छलाह पुनि बजलाह—"बाबा अब चान्दे सारि दैह मुदा आब हम एहीमे रहबह।"

एहि उत्तरकेँ सुनिते बाबा कृपादास कृपान्त सन बुद्धि पबलाह पुनीमे तत्र संग चुट्टा जे अनिवार्य पतीत होइत छल मन्दर आहिमे बोरि बाबाकेँ पीठपर बैसबए लगलाह कि समीप बैसल लोक हुनकर हाथकेँ पकड़ल। भीड़ मारैक एक प्रमोद बाजल "बाबा समाज निर्माण, एना नहि करहक। पुनिश्च जोनैक। लोकसभा होयतैक। हमरा सभ आन्दोलन जायब।"

ओहि व्यक्तिक कथाकेँ सुनि बाबा कृपादास बजलाह—"रे हे मोरा समाज कैसन है? तुम तो भीखा देकर घर से इसे निकाल दिया। हे तो मेरा

समाज है। तुम केन कैसन हमको अपने घरमें रखबा है ? हम तुम्हारे कैसन पतीन है ? जब हे आय देगा तो हम जान देबा। हम इसका चूकर बायेगा। तुम अगर हमको रोके तो बस्तीमें हम आग लगा देगा। तुमको यहां कौन बुलाया है ?"

दामोदर—"बाबा ! सबसे हे आज लोहुर समाज विकट। तो एकरा पकड़िकए चलए चाहुहु लए जाइ किन्तु हमहुक नहि।"

ओहि दामोदरक निवेदनके सुनि कृपादास बजलाहु—"ई कथे नहीं बनेगा ? एकर संतिकाके गोहारमें बनेगा जो ओ ओ बुझेगा कि गड़ामें निरंक का कैसन मरण होता है।"

विचित्र परिस्थिति छल। रामदास केकलीक प्रेमक पानिमा डुबाहु। बाबा कृपादासक चुट्टाक दाग देखाक हेतु निवारण बेग, लोकक समक्ष एक गोट जटिल समस्या छल। सभ अवाक्‌वसमें छलाह। कहरो किछु नहि बुझाइत छलनि। अकस्मात एक गोट बूढ़ दामोदर बाबाजीकानिमें निवेदन कयलनि—"बाबा ! ० दामोदर यदि हमरा लोकनिके मोहलनि देह। ११ मासके दामक स्कूल-पर सम्पूर्ण मासक लोक बैसल आ एहि प्रसंग पर विचार करब"।

बाबा कृपादास हुनकर एहि प्रस्तावके स्वीकार कयलनि तथा हुनकर प्रस्तावक पर रामदासके छोड़लनि।

फलतः ११ मास बीतल। पांच मन आ गामक स्कूलपर पांचो बाबाजीक धूनी भेटल। कृपादास ओहि वृद्धके बजबौलनि। ओ अपना संग अपराधी रामदास बाबाजीके हाजिर कयलनि। गामक प्रमुख लोकक बैसक भेल। रामदासके एक दिनमें सब बुझौलनि किन्तु काम आ बलिक प्रलोभनमा हुनका जीवनक तेहन अविच्छेद अंग बनि गेल छल जे ओ चुट्टाक दागक बैठनाके ओहि रमणीक वियोगक बेदनाक समान लिख बुझलनि। केकलीक प्रेमक एवमें राधाकोर रामदास बीतरागक अपेक्षा ओकर स्नेहाकर्षणक प्रभुक कमाइ बनकर विकास देख, दंभ आ दुःखपर विजय पाबि कए भेल। बाबा कृपादास ओकरा चुट्टाक दाग देखाक हेतु उपाय कमाइ आ ओक कर्तव्यविमूढ़।

एकाएक बिजुली सन फेकनी ओहि समयमे अपनोहु तथा अपन हाथक पोटरीके फेकि बजलीह-"नारी पुरुषक की कोनो सेनौता थिकैक आ सगाह बरबा-दुरबाक खेल जे चुटकी भरि लाल सिन्दुरके स्त्रीक सीऊपमे लेपलाहे भए जाइत ? एहिमे छैक बाबाजीक गहना। जे समाज वैरागीक बहुरागी बना सकैछ से कतेक भ्रष्ट आ पतित अछि से की हम नहि जनैत छी ? सगाह योगी-पुरुष दुनुक होइत छैक। आ जे योगी अपन विषौहुआके छोड़ल से की समझीआके नहि। हम एहि गामसँ अनताए जाए रहल छी। बाबाजीक संग हमर कोनोटा सम्बन्ध नहि अछि।"

एहि सबहेँ कहि फेकनी ओतएसँ पड़यलीह आ बाबाजी ओकरा परिआयब प्रारम्भ कयलनि। बाबा कृष्णदास बजलाह—"बचा, रामदास यही फेकनीका वर्तमान रूप है। इसी रूप को लेकर फेकनी तुम को नित्य नवीन और अपरिचित दिखाई दी। लो संभारो अपनी झोली और चुट्टा ! दण्डवत् !"

●

सौतनिक सिनेह

अड़तीसन बनकेन एवं बिलनोका सन चमकैत बाबी अपनेबाँत होइत बाबा सँ कहुए लगलीह— "काज-धंधा करैत-करैत आब हम थेजथेजीस भए गेलहुँ किन्तु अपन बकरहु कोनो टा चिन्ता नहि छैक मे की हम फकसिआरी काटि कें मरि जाउ" ?

बाबीक बनबुनाई यद्यपि बाबा के अनसोहाँत लगैत छलनि किन्तु हुनकर सहधरहुम बाबाक बड़काय के अगोरिक लगा ओ मगोड़ी करैत बजलाह "मैं नहीं" के कोन काज अछि ? एखन तँ पेहगर छी। नाम्हरोस किएक होयत अछि ? कहिएहु अपन-अपन ओरिआन करैत जाउ।"

दुखिया बाबाक एहि तरहक कथा सुन तँ बाबीक अनुकूले तथापि ओ किछुआइत बजलीह "अपने कहिबोक। बेटा पुतहु तँ बहोक थिक। नाहक हम किएक अपमान करब। फारकोआ जब भरि दिन कें (कोर कक और पुतहु बेटाक मायक मुनेस बनल रहुन। जेहने कोठी अछि तेहने गोरा। ककरा सँ के कम अछि ?"

बाबीक एहि तरहक दोहमाएब, अकछाएब और अकचकाएब तँ होइते रहैन छल किन्तु बाबीक एहि उक्तिसँ बाबाके भाग्य अनलि जे सतोख भेला सँ रमण और हुनकर हबी हुनका बनसोहाँत लागैत छलि। अतएव घुमसरैत एवं बिहुँचैत बाबा बजलाह —"हँ ! अहाँ कोना कहुबैक ? ओ लोकनि अहाँ के संहेबो करए तखन तँ ? सौतिनिक जे थिक ! तखन कनहु कजाहल नहि जाउ। और मोन न खिसियाए सौतनिक टाँग टुनु कुनिले जाय।"

बाबा यद्यपि बाबी के प्रायः उसउ कथा कहि उनकुनबैत रहैन छलाह और बाबी सतत अपन कपोट के विचारि अपन काज-धंधा में लागि जाइत छलीह किन्तु बाबी के कहिओ विश्वास नहि छलनि जे हुनकर बेटा पुतहुक खातिर बेसाट कथा कथा सँ गुलए पड़लनि। अतएव बाबाक ई कथा बाबीक

करेज मे नीर सम मलमलि और श्री लाइल फूल सन झमान भए के ठाढ़ि पड़लीह। हुनका ठकमुरी लागि गेलनि। कुनकम सन बरसायल आँखि मोर सँ छहाबोर भए गेलनि और दमकक फूल सन उज्जर मुँहक कारिख व्यथाक भार सँ करिछाए गेलनि।

बाबी चौकक काल धरि निरदिस एवं निराश भए के ठाढ़ तँ रहलीह किन्तु निरस्त भेला सन्ता श्री आनए सँ विदा भए गेलीह। छगुनताक भार सँ निकलना बजल एवं दमघल्ल मन्ना सिनेह और सहानुभूति सँ विमुख बाबी के बकोर लागि गेलनि। मानक बाहरक पोखरिक मोहार पर किछु काल बैसलाक उपरान्त विचार भेलनि जे किएक नहि ओकरा समहक मुँह एक बेर देखिलिऔक! आखिर छिओ बहना सँ भिन्न नहि। जखन ओकरा लोकनिके तहने विवेक छैक तँ रहौक। मुदा हुनकर कंहुन विचार भेलनि? कोन लज्जासि रखलनि? जे अपने आ गजन करैत छथि तँ के बेटा पुतहु उड़ल्लू बुलैत अछि। से तँ ओकरा लोकनि के एना कनी छविनेक! एहि पुनमुन मे अन्हार भए गेलैक। एक दिशि भमला और मोह बाबी के दमसलिन करैक छल और दोसर दिशि अपमानक रोष बाबीक हुनू पयर के जकड़ि के पकड़ने छल। अन्त मे एहि रेड़पन्नहेकम मे भमला और मोह पाछ पहि गेल तथा अपमानक लहरि बाबीक पयर के मारगर्ष सँ दूर धकल मनोरथ के सकचुम्मर कए भागी बहौलक। बाबी हृदय के हाहि बाप एवं सिहक निनाद सँ तरङ्गित जंगलक भू-भाग दिशि बढ़लीह।

निपट अन्हार रहनि। कोन-कोनु निर्जन और निःशब्द भए के दिनुका सकाल के मेरेबाक प्रयास मे छल और बाबी विमुखताक प्रकाश मे रातुका के विमुखेत भए रहक छलीह असीम एवं अनन्तक दिशि अनिका स्वतः अपनहुँ अपन मनस्थ स्थानक पता नहि छलनि। जंगलक भू-भाग मे चलब करैत रात्रिक अवसान समीप आयल किन्तु बाबी अविराम एवं अविरल गति सँ बढ़ते रहल छलीह। अकस्मात भुकुरवा तारा सन चमकैत केराक कोए सन चिक्कन, कीजा सन आँखि तथा अरुणक फूल सन अरुणायल अधर पर आतुर मुस्की दैत एक अपेर बाबी बाबीक नयीन आँखि बड़ सिनेह सँ बाबीके

बाहुवाईन अपन मुह चमकाक आपाह कएलथिन। ओहि एकबीकान के देहने कए छलनि नेहले मधुर बोली, पीच और स्वभाव चकरा आंखए देखि बाबी के विस्मय हे भेलनि किन्तु आगे अर हुनका कोना पुछितथिन जे ओ के थिकीह। अलबत बाबी निरुपारि के हुनक मुह जाबद नीक बुझलनि और ओ एखनी कए शिशेह में हुनका अतिशयक आम मुह आमलक। सुन्दर एवं स्वच्छ घर नीक जकाँ सजाओल छलैक किन्तु मुहपनि और चिआ-पुताक बिनु ओ घर नीरक आसक ये अहाल तत बाबी के प्रतीत भेलनि। ते बाबी अरबधि के हुनका पुछिए में देखथिन — अई हे बहिन! अहाँ एतए एकसरे किएक रहैत छिथिन तथा अहाँ के के सब छथि?

मुमुक्षीक आरी हुनक सभग बए गेलान। निसास छोड़ैत एवं छिरिआएत आ कहलथिन—"हे बहिन! हमा अछि पुत्रहु अछि स्वामी छथि किन्तु हुनका सब गोटा के हम भोजिन पर छोड़ि एतए पचीस वर्ष से तपस्या कए रहल छी।"

बाबी एक तं अपनहि व्यथा से व्यथित और चिन्ता से कातर छलीह किन्तु ओहि सुन्दरिक कथा के सुनि आंत अपोरित पुरुष भाव के बोधयेन, कहलथिन— अई हे बहिन! एहि अवधि में ओ नाकनि कहियो अहाँक खोज-बीज नहि कएलनि और अहाँ के अपन नेना के देखबाक सेहन्ता कहियो नहि भेल?"

एखनी बाबीक कथा के सुनि चिहुँकैत कहलथिन—"भेल तं नहि मुदा आब होएत अछि। किएक तं जकरा पर छोड़ली छलिएक सेहा ओकरा से अपन मुंह ओहि लेलकैक। मुदा छोड़ए एहि अनट कथा के। चलल टहिआएल कह। ओकर आत कए के सुनला कए।" एहि सहे कहि ओ बाबी के एक कोठरी में लए गेलीह जतए नाना प्रकारक भोजन पसरल छल। बाबी बड़ प्रेम से भोजन कएलनि और एक कोट पलंग पर ओलरि गेलीह।

और भेल। बाबीक नीन टूटल। मुमुक्षी बाबी के मुंह-कान धोबक हेतु स्वच्छ पानि देल तथा पीबाक हेतु पान। बाबी चारु दिशेत नयन फेर मे मुसकैत—"बहिन! एतए तं किओ आन नहि अछि और अहाँ कखन हे सब

काज कए सँग छिऐक ?" बाबीक अस्मक उपाय देत सुमुखी बाजिल "हे ! अन्हरोखे ने हँ सब काज भए जाएत सँक अन्हरे हे बहिनि और लकर ओगार करब। कोन भारी बात थिकैक जे तोरा अद्भुत बुझि पड़ैक छह"। एतबेमे आनए रहैत पन्द्रह दिन बीत गेल। एहिहर में बाबी सुमुखीक बल सँ अपन निरापनी सब पेट के भरैत छलीह और ओम्हर दहोदिशि नाना-हेतिक उपद्रव कचारोहटि भए रहल छल। लोकक अनुमान छलैक जे बाबी अपन अद्भुत कान्ति, अटल जिद्द, दृढ़विश्वास बहुत और अजबक अनर्गल आचरण से अपन अकस्मात जीवन के अन्त कए लेलनि। एहि गुप्तगुप्त में बाबा के आदमी सँ ज्वर लागि गेलनि तथा रमण आ दुन्नो हिका तारि के निरन्तर अपन बाबी के निरखबलि देलनि। सब अपन अपन विचार सँ एहि घटना के आँकैत छल, एक दोसरा के दोषमुक्त छल और अपन बुद्धि के सर्वश्रेष्ठ छल एहि बीच कलह सँ कड़कड़ैबाक शब्द भेल। एकक एक कोष दिशक धार मरनरेलैक। एकटा सुन्दरि अंधर रमणी बन गए चार सँ अन्तरालक पर पुनरस। ओकरा हाथ में पहु-पहु करैत एक बोड़ ऊक छल। ओ अंगहि ऊक सँ बाबा के अकिञ्चनए मलमीह। बाबा कोनक आत्मरक्षा करैए लगलाह। जो गहह करैत बजलाह—"हो ! दौड़ैत अह रमणक माय आन मलक।" ओम्हर रमणक दुन्नो सेहो कचारि मारि उठलीह जे एक बोट स्त्री ओकरा मोटा पकड़ि के विशिअर्दन अछि। रमणे भयातुर भए के चिल्लैए लगलाह। मनि अपन कक्ष पर कोन टिकटिकिआ सवार अछि अंसा गुणी बजाओक मेल छ। बाबा थूका फेंक। किन्तु परिस्थिति आत्मिक बदलए बहिनि देल अंगक अन्दाज छल जे बाबीए भूत बनि एहि तरहक उपद्रव करैत छथि।

एक दिन आकाशक कम में सुमुखी बाबी सँ कहल—हे बहिन ! तपए पहुनाए तँ करैत छह किन्तु गायक अवधि किछु छह। सुनल अछि जे अपने बड़ दुखित छथुन्ह। डाक्टर वैद्य निरखि देलनि अछि। रमण और दुन्नो सेहो बड़ विपत्ति में पड़ि गेलाह अछि" सुमुखिक एहि कथा के सुनि बाबी के भेलनि जे ओ हँसी करैत अछि। मलाल आ अपमान पूर्णकथिल "बहिन ! एहि बीहड़ वन में अहाँ के कोन पुरुष हँ सब बात कहैत अछि ?" सुमुखी

गंभीर होइत बजलीह "बहिन ! हमरा आब पुरुषक उपयोगे की अछि ? मोल के नारि मुख गुल के समधेनि आह पचीस वर्ष सँ एहि घर में सम्पत्ताक हमरा जे उपयोग भेल अछि तकरे सँ हम धन्य थिकीक। हे बहिन ! तोँ हमर दुखि के की करबहक ? वेह पारी लिक ह।" सुपुत्रीक एहि बात के सुनिसहि बालीक नेत्र सँ अश्रुधारा फुटि पड़लनि। ओ विकल होइत बजलीह— "बहिन आब हमरा एतय सँ विदा करह। आब हमरा ई घर कटैत अछि।" बालीक एहि उक्ति सँ सुपुत्रीक आँखिक आँखि में एकाएक अजस्र नोर भरबा आयलनि। ओ बालीके अंकवारि हुये रोसिहो भूँ भरए कलनि। ओ इस्त से चिलआब आन, टाका और सुपारी देलनि और जेबा काल विदाई में एक गोट पटोर और तमाखू देल बजलीह हे बहिन ! बहिनिक भोतार सँ तँ बाबाम गेल। ई पटोर और तमाखू लेने जाह। एहि पटोर के अनेक प्रकारक अंशहि सँ अनेक भिन्न-भिन्न प्रकारक मरद बनबेलहु और एहि तमाखू में जाहि वस्तु के संमिश्रण से समदा दे देलीह। हे बहिन ! मायक अभाव में तुमहीं तोरा मायुर पहुँचा देल छियीह।"

मायुर जेबा काल बेटी जेबा कलैत अहि बाली बहिनक कानए लागलीह। सुपुत्रीक कोंढ़ लेही फाटि पेलनि। सुपुत्री बालीके अनेक प्रकारक आदर आँचरक कोर में दुनकर आँखिक नोर पोंछ बजलीह — बहिन कनेक धैर्य धरि रहियह जे कनहु एक गोट बोहिनिया अछि। आब लड़कपन करह। आब दूर छोड़ह।"

बालीके नए सुपुत्री कनेक मार्ग सँ मायक कोल रूपें आँखिक पहुँचालीह से बाली किछु नहि बुझि सकलीह। आगत में बाली जहिना अनलीह कि सुपुत्रीके देखि बाली चिल्लाइ कए उठलीह एखने एक लेखिन और दयम बहिना भावावेश से आदि माय दिशि चढ़लीह कि ओ कानदा कहैत बजलीह—"ओ तँ आब हमर कोहि अन्य मनमोहक बेटा थिकीह। आब हम देखिओक किन्तु मायक मनोरथ तँ हानु देलकीक। आहु अपन मायक सेवा सहज करए।"

बालीक समस्त फरफंदी बन्द भए गेल। हुनका मेनलि जे कनहु सपना तँ नहि देखैत छिलेक। बालीके ओ अपन हुनु बाँचि के सिरजनि और सुपुत्रीक

दुनू पायर कें अपन नजर हाथे पकड़ि बजलीह—"बहिन ! आब किन्हु ने छोड़बह। आब बिन्हुछिअह। ई घर, वर, बेटा, बेटी सभ तोरे थिकह। हम तोहर टहुलनी बनि के रहबह। तोहर पूजा करबह। तों एतहि रहह। किन्तु सुमुखी अदृश्य भय गेलीह और बाबीक हाथ शून्य भए गेलनि। कनहु सँ मात्र शब्द सुनल गेल—"हे बहिन ! पवन, प्रकाश और पानि की कतहु पकड़ल गेलैक अछि ? तों देहधारी छह और हम रूप गंध रहित एक नारी जे पवन में रमकैत छी, प्रकाश में झमकैत छी और पानि में छहकैत छी।

सुमुखीक अन्तर्धान भेला सँ बाबी के क्षोभ और संताप भेलनि और ओ जहिना पटोर कें झाड़ि फेंकलनि कि विभिन्न प्रकारक वस्त्र ओहि सँ झपए लागल। बाबी मुदित भए ओहि वस्त्र कें समेटि उपस्थित लोक कें बाँटए लगलीह। बाबा कें अखन नहि देखना गेलनि तें ओ बजलाह—"सभटा बिलहे बाँट कए देब कि किछु हमरो लेल रहए देब ?" बाबी मुस्कुरा उठलनि और दाहे पोती-अँगा पहिर छमकैत बाबीक दोहाए देबए लगलाह।

वस्त्र कें बाँटि बाबी तसला कें आनि भोजन सामग्रीक याचना कएलनि। नाना प्रकारक भोजनक सामग्री तसला सँ बहराए लागल। किओ लड्डू लिअए तँ किओ खाजा। एक अपूर्व उगाधा लागि गेल और बाबी दुनू हाथे ओहि भोजन जाल कें बाँटए लगलीह। बाबा अपन धैर्य कें गमबैत दुनू हाथे लड्डू उठाए अपन मुँह में दाबए लगलाह। अन्त में बाबी रमणक हत्रो कें बजाए ओ पटोर और तसला देत बजलीह—"कनियाँ ! लिए ई अहीक सासुक उपहार थिक।"

●

ज्ञान-गुदरी

एक दँ अपन भारयाँ आ दोसर एकोद्दिष्टक बीच अपराह्न उपरान्त अहर्निश एवं अशमताहत महिला दुखिया बाबा बाटपर पहनाह छिर मे अपन दुनू आँखिसँ बजल लोर पुअबैत, दुनू हाथे कपार एवं छाती के" पिटैत आकाश ओलए अपलाह। राधेक जमहुर तथा अनवोल कानबके" सुनि बाबाके" मान भेलिन जे अपराह्न घटना घटलैक अछि। बाबा यद्यपि पूर्णतः विषयमें अनभुआ रहलाह तथापि अपने विषयक" अर्थाभाव आ अनगपूजाकी भारवाहे तहन ने पद्य छनाह जे आब मांगकर्ता अकारि आ आदत छलनि किन्तु जो कतन अपन अवकोड़मसँ अपन बाबाकके" अकारण नहि होएत देखि।

राधेक" बोधित तथा अपन अकप छोक छोरसँ हुनका आश्विक लोरके" पोंछैत दुखिया बाबा कहलाह— हो! राधे, तों" अकुना किछु एहि अदना मूनुके! हो सोचबि तँ अहो चिकैक कमन तँ छीन मुदनमून अछि। को अपने नहि पाबह हो! रवीक सोचनि को कोनो अकारणक निक। बेगाए! हमर। बेहुन कटाबर लोहर बाबो कमुन। तँ पहिलबो बाबो सोचैत रहिलमून तँ कि किछु हँ हमरा गुरु अधिनमून हो! अनरे मे प्रसाद करैत छह। अकिलके" समेटए। आब नाराज सेरमो सोचुन।"

बाबाक अतिलाइन कथाके" सुनि राधेक लोर तँ सुखाइये गनिनि नये जो आनमई करैत हुनका उपरान्त हैत बाबाए लगलाह "बाबा! की अनर्थ कथा कहैत छी। ककरो एना बुनि उपयुक्तविरोध। जो तँ नंदर गोलिह नहि तँ हमरा हुनकर विछोहमे कचोट भेल अछि।"

राधेक उत्तराके" सुनि बाबा पुन कहए लगलाह—"हो! सो" सरिपहुँ उपति रेलहु अछि। हो बताह! हम की कहुलियह जे आ नांर गेलोह? अरनह होहुर आप-पितासह। हो! कनेक धन्योपर तँ ध्यान दिऐक। जो आब

सबसों कनिकए औरुन। अर्थात् जिनाक गुहसँ पर्याप्त धन सम्पत्ति अनचून। बुझलह हे हमर भृगुसंहिताक मत जिकैक।"

बाबाक अपटक कथाकें बायी अकानि रहल छलीह। आ अपना प्रसंगमे कथनकें सुनि आँख मनोहैन एवं आसिन दोने बाबाकें अनचूनह, उनका आदि कहैत ओलह प्रारम्भ कयलनि। बाबा बाबीक मोनक भाव कें देखि अकारि कयक उचित नहि बुझि कहलहैन्हि हुनैत बाबीकें कहलनि— अरे महाँसोकनि नें अनेरे अहाँ सब गप्प करैत छी। ओ की कहह अहमसारि पेन्हीह अछि वा कोनो प्रकार खुदि जे अपन भए अपनीह। हौ! रांचे! अन्ये ओ पुरुष कथनोहिया होइत अछि जे परजमैया बनैत अछि।

बाबाक एहि कथाकें सुनि रांचे अकचकित होइत बजलाह "से कोना बाबा?" दुखिया बाबा नोसिडानेर्य नोसिकें ठारि नाकमे ठुसैत बजलाह—"हौ! रांचे! बेटाक परिचय प्रधानतः बापक नामे होइत छैक। देखए तों अपनो। तोहर बाप मुरहुम आ मामो पण्डित छलपुन। तें ने मात्र एगारह सय टाका दए कए तोहर विवाह भेलह। हौ! कौशल बेटीक नामे बापक परिचय होइत छैक। हौ देखह जें बेटा मजिस्टर वा मिनिस्टर भए जाइत छैक तें ओ मजिस्टर वा मिनिस्टर साहेबक बाप कहबैत छैक। कहबा हुनकासंकनिक बाप का नाम बुझल रहैत छनि? किन्तु केहुन अन्हर थिक जे जें किओ परजमैया भेल वा मासुर आयल तें अपन नाम, तथा अपनो बापक नामसँ पूर्वक पत्नीक नामसँ परिचित होइत अछि। देखह तों हमर, हमर बाप महामन्द मिश्र थिक किन्तु लोक दुखिया मिश्र कहैत अछि वा पड़ोसि कए। कहह तें जें हम एलए नहि रहितहुँ तें अपन वा अपना बापक नामकें कह के चीन्हितहुँ?"

बाबाक कटु कथनकें सुनि बाबीक कपटक फूल सेबक मलिनवर मुँह पजरल ऊक गल, अहंकारक फूल समक लाल ठोर मिसमिसल कोहना सन तथा आनन्दक पान सबक कोमल हाथ अन्हौर पानिक भाकलन बुझि पड़ल। ओ एक पैर जमीनकें खुंटैत तमकाल तोड़ए लगलीह। बाबाक अपटायन कथा हुनकर अहंकारक उपमाकें आरकुसा कए देलनिक। पाँच वर्षक बुत्रो का सात वर्षक बीतलकें लए आन आकलमे रहैत अपन पितियौतक बोलए बिदा भेलीह। बाबाक

संग हुनक पहिल पत्नीसँ उत्पन्न पन्द्रह वर्षक पुत्र रमण आ तेरह वर्षक पुत्री सीता रहि रहलीह।

बाबीक मैलाक रुमाल अपन आँखिमे लगा पोतकपरपर हाथ राखि बाबा पुनः कहलथिन्ह—"हौ! राधे! राजा दुखी, प्रजा दुखी आ योगीके दुख दुआ।" बाबीक आतुर एवं उत्कण्ठित कथनकें सुनि बाबा राधे मुसुकाइत सँ बुझी के अछि बाबा?" "हौ हम ककरोपर दोहराइत नहि छी। देखहु, हमो अपन स्वामीक लिखित पत्रिमे स्नेह करैत छी। जँ अंगरेज कोनो स्वार्थक पूर्ति नहि भेनेक कि ओकर प्रधान काज पत्रिके दोसर ओकर अवसानके सूचना आ मान-मर्यादाके कुरकुट काज होइत। हौ! हम तँ कहबह जो व्यक्ति अन्य विचार आ वेदाक कथाद किछु अपने अपन लोकक बाबा कथनि।" बाबीक प्राण-संशा बहिये रहल छलीह कि एहि अवधिमे बाबी प्रतिवाद करैत हुनका टोकलनि—"बाबा वेदा-वेदीक कोन बात? जो अभ तँ अपने शारीरिक सुजन पिक, पाछेके उत्तर देब जाबा बाबाए लगनाह—"हौ वेदा-वेदी जँ अपने शारीरिक सुजन पिक तँ ओकर बाप कक्कर उपाय लगाइक पोथाहि पिकीहु अकरा अपने अरबपति हुबए काज पिक। हौ! वेदा-वेदी पुत्री पिक, पुत्री। जँ मिरका सम तँ अपने त्रुटि अथवा अन्यथा चिन्हुक के करतह।

बाबीक नहि कथाकें आसक्ते बाबी राधे पुनः कहुक प्रारम्भ कयलनि—"बाबा! बाप-बापक पौरुष अथवा पहि जाइत तँ वेदा अपना लोकनिक हेबा-टहुल की नहि करैत छथि? हौ वेदा अपने बाप-बापके कथा कए नहि चुआबैत छैक जे अहाँ एना कहैत छिऐक?"

राधेक बाबीके निर्मूल करैत बाबा अपन पुत्रक बाकुलिके चिन्हुका सन अनबैत एवं चिन्तिमाइत बाबा कहलथिन्ह—"हौ! कक्कर वेटा बाप अथवा छैक? बाप-बापक रहलाहिकाल बड़ा पुत्रोहु तनके करैत छैक जँ लोकसालोकनिके टाका-पैसा छैक ते तँ कुशल नहि सह 'कहै नहारय हाक टाय-टाय'। हौ! आब तँ लिखक लिखा तेजैक या हेतु पुत्रोहु विलायतिक्रिए गेल वे ओकरमे बाप-बापके लिखीकी या बरकमे चिट्ठी देब अछि तथा पुत्रक बदलामे कुटिबैत अछि।"

बाबाक एहि उक्तिकें सुनि हाथें सँ अटपटाकिए अरहर पहि रहलाह आ रमणी एवं सीमा सेहो मोटा-मोटा बाँहि बाबाक उद्धारक हेतु अपन माथा बाबाक माथा करबाक तैयारी कयलनि। बाबा कनाहकुल मन कलबरल कलनहुँ भेल गमैत देखैत तँ अनाहु किन्तु स्वयं कलहुँ भेला कलना सभ अपरा फकरा कविचयि।

बाबीक अपन अवरि अवरि जे रमण आ सीमा सेहो पड़ायल छ। रहलीह कहि तँ अपन माथाकें उमारि दौड़लीह आ बाबाक दुनूकें मना कए पुनि घर आपस अबलीह।

बाबीक एहि उमलल आचरण सँ हतोत्साह भय तँ बाबाक कदौरी छोड़ए लगलीह और बाबा मोटे अटोगर भूतए लगलाह। दुनु दिशि सँ एक बेगरता केँ दोहलनि देखाए लागल। उनहुल आ उपरागक बर्ष होयब लागल अर्थात सँ खट-खटिनक अभिनयक दृश्य उपस्थित भए गेल। अर्थाभाव विचारें बाबा अपनाकें अकेल, अनाथ अनुभव और अकेलाह अनाथ और बाबाक अनुसारें अपर चलि, अपसरानि एवं अपहरक मारल सँ अपरकाठ नाक छल।

बाबा केँ अधीक भाग दोहि पिनिनीलक अंतए देखल अपरानि अपनैत छलनि अर्थिका सँ हिस्सा-बखराक हेतु हुनका साथ बर्ष सँ अलग छलनि। अपराह ओ किन्तु मे आब मोहि घर-आँगन सँ रहलाह। बाबाक पुत्रा चारि ओ मात्र मोहि रानुक हेतु ओतए रहलाह तथा अन्हरोखे वृन्दावनकें जेलाह।

बाबी कन्यो की गुजरराटा छलीह जे चुन्नी सँ बसोहनि आबि। ओ बाबाक एहि धमकी केँ सुनबक बोली चुसलनि तथा अपन शिवा-पुत्रा केँ लए सुतबाक हेतु एक मोट घर मे चल गेलीह और बाबा एक मोटा जन यदि अलगाव केँ विवाह नेलाह।

एहि लोकमाता मे यदि चुराइहो कहैत छलीह केवल रमणक स्त्री जे कोहबरक कनिया छलीह। कोबिलदू आम सन चोकहल, चिरलाक दुध सन केश, उमहुल आर उपरागक घर सँ सिंहरल, पाकल छानक सीस सन मुकल तथा वेदनाक व्यथा सँ अरासल ओ कंपैत हाथ सँ चारि मोट ठकुआकें जे बाबीक

भायक ओहए से बेस मे आयल छल बाबाक सीरमाक ओहा मे राखि देल जे ओ ओहि ठकुआ के खाए के अपन भूख के शान्त करताह। किन्तु बाबा छनकट होयतहुँ व्यवहार मे सिनसोड़े छलाह। हुनका बनेको लुटका अहि भेसनि।

भोर भेल बा=ो बाबाक हेतु चाह बनलनि। बाबा सहो अपन आसन के बिसरि ओहि पाय के जहिना अपन ठोर मे लगौलनि कि बाबीक नजरि सीरमाक ठकुआ पर पड़लनि। ओ गड़मन छन फुफकारैत बजलीह— 'ई की थिक ? हमरा गंजन करबु आर आने ठकुआ मांगि के खेताह ?"

बाबाक छाती अगुड़के हुसारक मारि सन टपर मोचा होयब लागल। ओ नरमतेश्वर के हाथ मे उठाए अपन कान बजलाह जे हमका ठकुआक प्रसंग मे किछु ने बुझल छलि और बाबी किएक और कोना बाबाक बात के लगए मानितथि जकर कि प्रमाण प्रापतहि छल। ओ हुनु हाथ अपन कपार पिटए लागलीह और जहिना समीप मे राखल लोढ़ी के अपन कपार फोड़बाक हेतु उठौलीह कि रमनाक स्त्री हुनु हाथ नाड़ही के दिनैत बजलीह "माय हम दोषी छी। ओ ठकुआ जे बेस मे आयल छलैक से हम राखि देने छलिऐक। एहि मे हमर दोष अछि।"

बाबा एहि कथा के सुनि गहुमाइत एवं सटके गनगनैत बजलाह—

जीव अन्य को ई कथा
समारी बाद सिद्ध।
पंच विकल्प जीवके,
अवय अनादि असिद्ध।

●

स्वर्गक नौत

नौत सभवासे, गप्पकें गिरबाम आ गलंबरपर सेक नौतवाम अलक ब्राह्मणकें गुमान रहैछ औतेक अलका नहि एहन कोनो काम नहि जतए एकटू गोट एहि बरहुक अगियाबेताल नहि रहैत अछि।

दुखिया बाबाक स्थान गामसे एहने नोकक मध्य छल सम्बन्धमे जो चाहे काका रहथुन भाय रहथुन वा बाबा किन्तु हुनका सभ दुखिये बाबा नामे सम्बोधन करैत छल।

दुखिया बाबा गामक मुखियाक औतएसँ हुनक बापक बर्सीक नौत आएल छलाह। दालिमें कतेक पानि छलैक, तरकारीमे तेलक अभाव, मीठक कोनो चर्चो नहि आ जँ दही छलैको तँ औहि बहीसँ की जे खुरचनसँ परसल जाय? एहि गुनधुनमे दुखिया बाबा गाँजि सुनने छलाह कि हुनका औतए यमराजक दूत उपस्थित भेल। बाबा पहिने तँ अकचकेलाह किन्तु अज्ञान जो गोर लगैत यमराजक बापक बर्सीक नौत देबाथिन तँ बड़ प्रसन्न होइत पुछलथिन—"यमदूत! तमाकुल खाएल छी? लिअए, तमाकुल। देखू बड़की पत्नी चिबैक। जँ ई पत्नी नहि खाइत होथि तँ कनेक पानि पीबि लेब बड़ कड़गर छैक।"

दुखिया बाबाक एहि कथनकें सुनि यमदूत कहलनि—"बाबा! तमाकुल राखल जाओ। स्वर्गमे ई वस्तु नहि छैक। तँ खाएलि नहि अछि।"

दुखिया बाबा तमाकुल होइत पुछलनि—"अयँ जी यमदूत! स्वर्गमे माछ छैक? दही, मधुर, आम तँ अवश्ये होयतैक?"

यमदूत बाबाकें आश्वस्त करैत तुरफड़ उत्तर देलनि—"बाबा स्वर्ग तँ स्वर्गे थिक। रेहु मुआ, माकुर, कबै माकुर एहन कोन माछ अछि जे स्वर्गमे नहि? कामधेनुक दूधक दही सभक एतुका गाय-भैंसीक दूधक कोनो स्थान

छैक ? स्वर्गक रसगुल्ला, बाबा आ लड्डूक सोआमे पिन्टू सिनाउ तथा मैसूरक कोनो चर्चा कयल आ सकैछ ? आम तँ स्वर्गमे अमरावतीमे आयल आ अलहिर्न समय संसारमे पसरल ।" यमदूतक एहि बातिकें सुनि बाबाक जीह पनिसाइत लगलनि तथा ओ उमाहुल होइत कहलाह—"यमदूत ! की कहू लोक तेहन के अपरोधक आ बदमा भए गेल अछि जे सभ दा चिमा-कमकें तँ छोड़िये देलक । जे छाहुचो नोचल करैत अछि तँ अतमोहोंजे लगैत छैक । बाहुल आंखलाक फल तँ तखने होइत जखन बाहुल भोजनक उपरान्त बाकरए लागथि । यमदूत ! यमराजकें कहि देबनि कोनो देवी इन्द्रलाक नहि करथि पाँच सेर छोआ लावा सन रसगुल्ला, पचास पोट लाबा तथा एक लड्डुओ आ एक नग पालदहू बा चाही आम दुसरा अकसक कए दैत छथि । एतबेमे अटाचंस भए अबतनि ।" बाबाक अकट्ट कथाकें सुनि यमदूत कहलाह—"बाबा, आज केहन अजगुत बात कहैत छी ? यमराज बाबूजे यमपुरीक मालिके तँ थिकाह । आब लड्डक कक । आंखुका बीरिआओन देखि कए चकचिहोर लागि जायत आ एक बेर भोजन कएलाक फेर किछु एहि ठामक भोजक चर्चा नहि करब ।"

यमदूतक एहि लरहक आदुआल उक्ति पबैति आन्हरबाबीमे राखि बाबाकें उम्मत बना रहल छल तथापि हुनक बालपर बाबाकें अनभरोस नहि भेलनि । ओ अपन छाना आ फराही लए यमदूतक पाछाँ पाछाँ ओहि लड्डुका चर्चा बिदा भेलाह जे अकरी महाजनक लिखलीक पाछाँ-पाछाँ जनमनाइल भेल बाहल अछि । अना-जना समय बिलैत गेल, बाबाकें अनुभव होइए लगलनि । ओ आनंदित भए गेलाह आ बड़ मन भए यमदूतसँ पुछलनि—"यमदूत ! आब तँ स्वर्ग निकटे होयतैक ? अनमुआर मार्ग-चरकें देखि आशंका होइत अछि जे कतहु अपथपीपर तँ नहि चलल सी ?" बाबाक एहि वचनकें सुनि यमदूत बाबाकें घुड़की लैत कहलनि—"बाबा अपने छल चरकर व्यक्ति कतहु भटकनिये पड़ल अछि ! यमपुरी आब आबि गेलहुँ सुनला मन परैत छथिकें की नहि देखैत छिएक ? ई लोकनि जखन सत्यलोकमे छलाह तँ जिरकिट्टी छलाह आ एहि ठामक छिपचरि चाकए मोकुला-बिलाड़ बनि गेलाह अछि । आब अहूँ

औपुनका बाप छोड़ि सकल एहि ठाम रहब। एतहि ठाढ़ रहू ! हम धर्मराजके अपनेक आगमनक खबरि कए दैत छिएनि।"

यमदूतक एहि कथाके सुनि बाबा चुपचाप ठाढ़ भेलाह। यमदूतोक ओ अन्तुके देखि हुनका डरसँ तरास लागि गेलनि। ओ एक भयंकर ओखरि परोपाटा हेतु पानि सकलथिन। ओ हुनका कहलथिन "एतए सभथेपर सब किछु भेटैत छैक। धर्मराजक बिना जिनकी होलक धरि बना छैक।"

ओकर एहि उक्तिके सुनि बाबा तमसाइत बजलाह—"कहलेन कहां के। हौ यमराजक आगमक बाँकी बिकलि, ओ हमरा संगे एए कए बजीलनि अहि ब्राह्मण भोजनक निमित्त वा तों पानिकी धरि नहि देत छह ? करकट कहांके। तों कहलहिंसा कथनिहार धिकाह। एना कुनि टरकाह।"

बाबाक एहि कथाके सुनि यमदूतोक ओ क्रोध बढ़ल — "टरकबन्द अमेटू नहि तँ टकुआनाल कए देब एतए ने तँ कयो गुड़ अहि आ ने ब्राह्मण भोजन-ओखा भए एकल अहि तेकुन जेरबर पाप कयने हमरे तेहने दम हमरा।"

बाबाक सभ टा ओखड़ भोगका कंठ बकी खुला गेलनि। आखिर नोट टपरए लगलनि ओ लाचार बाबाक कानक काया बड़ी बोला कए बजलाह। यमदूतके छुटकट बजलाह एवं अनेकट कहैत बारि देब बजलथि कथनि कि धर्मराजक अनबी भेलनि। बाबा धर्मराजक सोकनि जाहिला बेबाह कि यमदूत ओतएसँ खिसकि गेलनि। धर्मराज अनेक बैसल चित्रगुप्तसँ कारक लेखा-जोखा करबाक आदेश देलनि। चित्रगुप्त बड़ीक पन्ना उलटबैत बजलाह—"महाराज ! हिनकर कथाने तँ सब टा कारिख चेन्ह अनि !" चित्रगुप्तक उत्तरके सुनि धर्मराज पुछलनि —"ई एक नीक ब्राह्मण धिकाह। संध्यावन्दन कतेको बेर कयलनि अछि। पूजा-पाठ नित्य कयलनि। तकर एना किएक ?"

धर्मराजक एहि कथाके सुनि बाबाके भान भेलनि जे धर्मराजो ब्राह्मणे धिकाह। अतएव ओ तुरान्त उत्तर देलनि— 'सरकार, परातमे सब एकतीमे खालीवला एसरि देलैक अछि। 'ब्राह्मणक ब्राह्मणी अछि। सरकार, ई ब्राह्मणके नहि देबलैक तँ दोसराके कोन नरक छैक। बराबरीपर ब्राह्मणे हमा ओल जाइत अछि आ एतहु ब्राह्मणे !"

बाबाक आलोचक उत्तर दैत चित्रगुप्त महाराज हुनकर विचारलयक प्रसंगमे सि-उदाहरण बजलाह—"महाराज अपराध होयतहुँ ई अपराध एवं बहुमुख व्यक्ति छथि। बड़ा बाबाके ई अपराध बए अपन काज सुधारि लेथनि।"

धर्मराज अकचकाइत बजलाह—"से कोना?"

चित्रगुप्त कहय प्रारम्भ कयलथि—"महाराज! सांसारिक रूपमे बड़ा बाबा हिनका हेतु परिवारक बीच विभेदक, किन्तु अन्तरात्मामे अपने अनुसन्धानक द्वारा ई आंकड़ा परिवार अपनोक लिए कयलनि तथा अपन बेटा-बेटी, भाइक सार-सरबेटा सभके नीक-नीक सोचारी दियौलनि। एतबेक नहि ई तेहन अपंजी छथि जे अपन बुद्धिक तर्कसँ ककरो फुसिया सकैत छथि। एक बेरक कथा थिक जे ई एक युवककेँ कोट-पेंटमे देखि एक गोटेँ युवकक परिचय पाल पूछि ओकरासँ सोर करए लगलाह—अच्छा! अच्छा! नवयुवक अकचकाइत समीप जँ अयलाह तँ निःसंकोच भए कहलथिन—हो, हम तोहर मौसा थिकियह। प्रणाम करह।"

नवयुवक प्रणाम करैत उत्तर देलक—हमरा तँ मौसी छथिहे नहि। हमर माँ तँ एकछत्रि बहिन छथीह।

बाबा हुनक अपवादक खण्डन करैत बजलाह—"हौ बबाहु! तोरा मायक बरसक साल बर्ष पूर्व तोहर मौसी मरि गेलीह। अखन तो तीन बर्षक छथाह तँ हम तोरा औतए बेच छलहुँ। तोहर बाप बड़ प्रेमसँ खुऔलनि-पिऔलनि। अएला काल तोहर बाप एक बोरा धोती आ दस टाका विदाइमे मेहो देने छलाह। आब तँ ओहो सोकनि नहि रहलाह। तखन हुर्ष अछि जे तोँ पबिस्टर भेलाह। हौ! सम्बन्ध बड़ प्रबल होइत छैक। देख-भेल किछु थिकैक। आठम दिन तोहर पबिस्टीक उपलक्ष होयतह। आशिकए बड़ाइ बला बहुत!"

नवयुवक एक सय टाकाक एक नोट ओहि बजलाह—"मौसा! हमरा तँ पुरस्कृति नहि भेटत तखन भुमाकोन आदि लए हमरा आज कए दितहुँ।"

दाबा सत्तर उत्तर देत बजलाह—"हम्मा, नामक-नामक किछु चिकैक। सम्बन्ध धरि रखने रही। तों तँ अपने सजान छह।"

चित्रगुप्तक एहि कथाकें सुनि यमराज चकित भए पुछलथिन—"ई तँ अचिन्त्य छथि। कृपि कोना बचलाह? प्रायः भय भेल होयतनि।"

चित्रगुप्त यमराजक जिज्ञासाक उत्तर देत पुनः कहब प्रारम्भ कयलनि—"महाराज, कृपिक तँ ई खेलिये करैक छलाह। एक बेरक कथा थिक। एक मोट होटलमे ई अपन एक मोट शिष्यक संग भोजन करबाक हेतु गेलाह। होटलमे छोलह मोटेक भोजन बनल छल। पुत्र आ शिष्य गिलि सभ टा भोजन हकोसि गेलाह। शिष्यकें भोजनक हेतु होटलवला पाइ महलाधिन तँ ओ ई कहि जे हम हिनके समक्ष पाइ दए देबिनह खुटकारा पौलनि आ बाबा भोजले कालमे भोकारि पाड़ि कानए लगलाह ई कहैत जे—'ओ बाबू! जहाँ हमरा समक्षमे खेनाइक मैया देखिथनि, किन्तु हम तँ हिनका एकबारेमे देखिथनि। कतहु हमरोकें जे फेर मारथि।' एहि तरहें ई होटलवलाकें समझा दए कए ठकि लेलथिन।"

"चित्रगुप्त जी! ओ जखन एगारह मोटेक भोजनकें ई एकसरे खाइत छथि तँ हिनक भोजनक भंडार कोना होइत छनि?" धर्मराज नितान्त विस्मित भए पुछलथिन।

धर्मराजक प्रश्नक उत्तर देत चित्रगुप्त जी कहब प्रारम्भ कयलनि—"महाराज! यद्यपि हिनका अठारह मोट पत्नी छथिन किन्तु ई अपन परिवारमे साथ एके पत्नीकें रखने छथि। ई अजरामुख ब्राह्मण थिकाह। भरि सालमे एगारह मास तँ ई साधुरूपे विचरैत छथि आ एक मासमे जे बचैत छनि तकर उपयोग ई भिन्न-भिन्न महाजनक यूथ ओमूल कथनिहार सभेटाक लिपाहीक रूपमे विचरैत छथि।"

"चित्रगुप्त जी! अठारह मोट पत्नी छथि। आश्चर्य! सजान तँ ई एक कोट छोर साढ़े थिकाह!"

"हँ महाराज! आहार आ व्यवहार सेहो तद्विनह छनि!"

"चित्रगुप्त जी ! सासुरमे हिनकर आगत-स्वागत तँ खूब होइत होयतनि तथा महाजनलोकनिक प्रियपात्र ई कोना भए गेलाह ?" धर्मराजक एहि प्रश्नक उत्तर देत चित्रगुप्त जी बजलाह—"महाराज ! सासुरमे हिनकर पदार्पण भेल कि सासु हिनकर भोजनक हेतु औनापथारी देब प्रारम्भ कयलनि। स्वतः तँ ई ओहि ओलरए लगैत छथि आ हिनकर साल, ससुर तथा सासुकेँ चन्द्रायनव्रत प्रारम्भ भए जाइत छनि। महाजनक तँ ई एक पैघ हुण्डीवाल थिकाह। जे कड़ारपर कण अवाय नहि कयलनि ओ सूदि-मूरक संग हिनकर भोजनक भारकेँ उगहए लगलाह।"

"चित्रगुप्त जी ! सभ किछु होइतो ई व्यक्ति आमेखी आ उकठाह तँ नहि छथि ?"

जिज्ञासाक स्वरमे धर्मराज पुछलनि।

चित्रगुप्त एहि जिज्ञासाक उत्तर देत कहब प्रारम्भ कयलनि—"महाराज ! आमेखी तँ ई तेहन छथि जे एक फड़ी माछ पकड़ए अपना पक्षमे मोकदमाक फैसला कए लैत छथि तथा एकान्त विद्यामे तँ ई तेहन प्रवीण छथि जे ई कीर्त्तन स्वर्गमे हड़ताल एवं अनशन करा सकैत छथि।"

चित्रगुप्तक एहि कथाकेँ आगमे मानि धर्मराज बजलाह—"से कोना जी ? ई तँ मुँहलग छोल-पखारल छथि।"

चित्रगुप्त बहीक दोसर पन्नामेँ उलटबैत कहलनि—"महाराज ! हिनकर अपने पितिऔत हिनकापर अपन हिस्सा बकड़ाक हेतु मोकदमा कयलनि। जाहि हाकिमक इजलासमे ओ मोकदमा छल, हुनका बेटाकेँ ई अपन पितिऔतक नामे एक फड़ी रेहु माछ पठौलनि। हाकिम घूसखोर नहि छलाह। एहिपर हुनका बड़ साहस भेलनि आ ओहि मोकदमाकेँ ओ खारिज कए देलनि। महाराज ! हिनक गुणानुवाद कतेक कहू ? चुगली कए कए ई व्यक्ति-व्यक्तिमे अड़ारि उत्पन्न करैत छथि आ एक अंडाकेँ ई तीन अंडामे बनबैत छथि।"

चित्रगुप्तक एहि उरहुक कथाकेँ सुनि सुखिया बाबाक रहल-सहल धैर्यक अन्त भए गेल तथा अनबोल करैत ओ बजलाह—"जी चित्रगुप्तजी ! यहाँ केँ

हमरासँ कथिक अपराध भेल ? जे एना उकटैत छी ? की हमरा अहाँके ने तँ एक आदिमे सेंते अछि आ ने कोनो सहूलारे। तखन धर्मे ने एतेक अगमर कयने छी। एकदिसाह सभ टा बाजल जाए रहल छी। कतेक अपनोपर तँ सवारि दिवौक। अहाँ जब्बर अनबब छी किन्तु एना जनु अन्हेर करी। अहाँक धमधूल ठकि कए अनमक अछि। कतेक मोल्लाह अछि अहाँक पुत्र जे मोल देलक आ पाँच घण्टा भए गेल आ एखनधरि बिजहो धरि नहि कटौलक। तखनो अहाँ सेहो बचारैत छी ? जेहने अनगफुलनी मालिक तेहने अलच्छ रहल ! धर्मराज ! कतएक नियम विवेक जे प्रपंच कए कएलो रही, भोगा-पूरामे पूरक कए दिऐक ?"

बाबाक एहि उलहनक उत्तर देत चित्रगुप्त जी कहलाह—"अपने सभकेँ ठकि सकैत छी किन्तु हमरा नहि। की बुझल नहि अछि "लिखलक आबू बकत"केँ कोनो स्थान नहि छैक। अपने तेहन उड़ैत छी जे तँ धमधूल अकिलसँ काज नहि करैत तँ अपनेकेँ की ओ किछु पकड़ि सकैत ? मोन नहि अछि १९४२ मे जखन अहाँ रेलक पटरी उखारने रहिऐक आ तार तोड़लिऐक तँ अहाँकेँ पकड़बाक हेतु अंग्रेजी सरकारक सोल्जिर बीसाइत रहि गेल आ अहाँ नेपाल सरावमे भागवत बनैत रही। धन्य छी अहाँ जनिका कटाकलिसँ कतेको रात जमींदार फुरफुद भए गेलाह आ अहाँ कतेको घरकेँ परहंक कयलहुँ। आब एतएसँ अहाँ किछु नहि पकड़ि सकैत छी। अहाँक हेतु एक अन्हार कारी कोठरी बनि गेल अछि। अहाँ ओहिमे बंद रहब। जीवनमे मारक मौड़ आ मारक कौट भेटल।"

चित्रगुप्तक एहि कथाकेँ सुनि बाबाकेँ नामक पटवारी द्वारा हालबुकाक टाका पकड़बाक प्रसंग स्मरण भेलनि। कोना ओ देवालजीकेँ टाका नहि देलथिन, कोना ओहि कारणेँ हुनकर जमीन निलाम कराओल गेल तथा ओ राजक मनेजरक कोठए बजाए निवेदन कयलनि तँ बकाया मालगुजारी कोना माफ भेल छल समस्त बात सोन पड़लनि। बाबा रहलसहुल बैठकेँ समेटि धर्मराजसँ निवेदन करैत कहलाह—"महाराज ! हिनकर दुखकाबय आर

टिटकारीकें को अपने नहिं चनैत छियनि ? ई तँ हमरा पुरखनू छापर मुहैत छथि किन्तु ईहो धरि ई नहिं चनैत छथि जे ओकरा परिछनि लिआबोल आदत। धर्मावतार हम अपने लग रहब किन्तु एके गोट मनोरथ अछि जे किछु टाका-पैसा लगाती-भिरानीमे छल तकरा विषयमे बौआकें नहिं कहलियनि आ हुनका मागतें एक बेर भेंट कए आबितहुँ। ई कहि ओ ठोह पारि कए कानए लगलाह।

हुनकर कानब सुनि अड़ोस-पड़ोसक लोक दौड़ि आयल। कोलाहल मचि गेल। बाबाक निश्र सेहो टूटल आ लोक सभकें देखि ओ कौलन ई यमदूतकें आ कौलन लोक सभके गारि देबए लगलाह।

●